नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
भिलाई - दुर्ग

अमंत्रमक्षरं नास्ति नास्ति मूलमनौषधम्।

महानदी

"नराकास भिलाई - दुर्ग" की गृह पत्रिका

2025

ऑपरेशन सिंदूर

विशेषांक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
भिलाई - दुर्ग (छ.ग.)

एवं
र्षेक पुरस्कार वितरण समारोह 2024-25
28 अगस्त 2025

61वीं छमाही बैठक

• संरक्षक •
श्री चित्त रंजन महापात्र
निदेशक प्रभारी
सेल–भिलाई इस्पात संयंत्र
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
भिलाई–दुर्ग (छ.ग.)

• मार्गदर्शक•
श्री पवन कुमार
कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन)
सेल–भिलाई इस्पात संयंत्र

• प्रबंध संपादक •
श्री राजीव कुमार
महाप्रबंधक
(संपर्क, प्रशासन व जनसंपर्क एवं प्रभारी राजभाषा)
सेल–भिलाई इस्पात संयंत्र
सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
भिलाई–दुर्ग (छ.ग.)

संपादक मंडल
श्री सौरभ कुमार राजा
महाप्रबंधक सेल–सेट, भिलाई

श्रीमती अनुराधा धनांक
उप मंडल अभियंता
भारत संचार निगम लिमिटेड, दुर्ग

श्री पंच राम साहू
वरीय सांख्यिकी अधिकारी
राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय, दुर्ग

श्रीमती भावना चाँदवानी
वरिष्ठ मंडल प्रबंधक
यूनाइटेड इण्डिया इंश्योरेंस कं. लि., भिलाई

श्री जितेन्द्र दास मानिकपुरी
उप प्रबंधक (संपर्क व प्रशासन–राजभाषा)
सेल–भिलाई इस्पात संयंत्र

संपादन सहयोग
नराकास सचिवालय के कार्मिक

महानदी

राजभाषा गृह पत्रिका – वर्ष 2025
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई–दुर्ग (छ. ग.)

'ऑपरेशन सिंदूर' विशेषांक, अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	नाम	पृष्ठ नं
01	उजाले की ओर	अनुराधा धनांक	08
02	जय हिंद की सेना	अमितेष पुरोहित	08
03	भारतीय खाद्य निगम	संजीव कुमार	09
04	विजयी भव:, शगल	रश्मि अमितेष पुरोहित	10
05	देश भक्ति की परिणति	सतीश कुमार अग्रवाल	11
06	ऑपरेशन सिंदूर	ज्ञानेन्द्र सिंह राजपूत	12
07	नारी का शौर्य	अनिल कुमार द्विवेदी	12
08	रणनीतिक कुशलता	विजय सिंह ठाकुर	13
09	ऑपरेशन सिंदूर–वीरता में लिपटा न्याय	कु. अग्रिमा दुबे	14
10	पेड़	राजीव कुमार मेहता	14
11	कर्म का सिद्धांत	सौरभ कुमार राजा	15
12	इस्पात उद्योग के सिपाही	शुभम किशोर मिश्रा	16
13	मुझे बुला लो	पी.आर. साहू	17
14	ऑफ़िस लाइफ़	साहिल भारती	17
15	विकास की राह पर भारत	कु. तनया र. गडलिंग	18
16	सच्ची मित्रता–औपचारिकताओं से दूर एक रिश्ता	कौशल किशोर शर्मा	19
17	छत्तीसगढ़ की खाद्यान्न शक्ति और विकसित भारत 2047 का संकल्प	बुद्धभूषण दिलीप यशवंते	20
18	पहाड़ी मैना: छ.ग. का राजकीय पक्षी	भागवत राम निषाद	21
19	पचास के बाद : जीवन की फरियाद	डॉ. अजय आर्य	23
20	सपनों की उड़ान	जितेन्द्र दास मानिकपुरी	24
21	भारतीय वायुसेना की टीम 'सूर्यकिरण' का समर्पित	अभिषेक साहू	24
22	वंदे वीर जवान	गरिमा चंद्रा	25
23	जय वीरों की हुंकार	दानवीर कौशिक	25
26	सेना का पराक्रम, विकास की बात	केदार नाथ सोनबेर	26
27	नारा	अमृता गंगराडे	26
28	संघर्ष	आशुतोष त्रिपाठी	31
29	ओ पथ के राही...	उर्वशी	31
30	आखिरी सलाम	अंकित खोब्रागड़े	33
31	महिलाएँ सब कुछ हासिल कर सकती हैं	पाखी भगत	33
32	प्रतिशोध	अलंकार समद्दार	34
33	मेरा भारत	अमृता गंगराडे	34
34	आतंक की खैर नहीं	पंकज राठौर	35
35	ऑपरेशन सिंदूर	अविलाष प्रसाद पंसारी	35
36	देश उसके गीत गाए	त्रिभुवन लाल साहू	35
37	भारत एक मज़बूत राष्ट्र	पांडे रैवनाथ सेनफडू	37
38	ऑपरेशन सिंदूर	अनिल कुमार अग्रवाल	37
39	सुरक्षा और संवेदना	नूपुर बिस्वास	38
40	कहानी, प्रदूषण का विकास, मैं से निजात	ओमवीर करन	39
41	केवल एक युद्ध नहीं	अपु बेहरा	40
42	बोझ	शुभ्रा सिन्हा	41
43	भारत की धरती पर	जय प्रकाश पाण्डे	41
44	भारत के हम लाल	विटेश्वर नाथ	42
45	भारत का प्रण	चंद्रकांत नाग	42
46	साहस	विक्रम घुले	42
47	आक्रोश की अग्नि	किशोर कुमार नशीने	43
48	करारा प्रहार	संदीप दीक्षित	43
49	सामाजिक न्याय	अभिषेक साहू	45
50	अब तो आ जाओ	ओमवीर करन	45
51	तलाश,ज़िन्दगी, खुशियाँ, सफ़र	नितिन गोस्वामी	46
52	वतन को सलाम	पन्ना लाल सिन्हा	48
53	सिंदूर का रिश्ता	शालिनी के. मानकर	50

टिप्पणी

पत्रिका की रचनाओं में व्यक्त विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं। मौलिकता एवं अन्य विवादों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होंगे।

संपर्क सूत्र: राजभाषा विभाग–313–ए, तीसरा तल, इस्पात भवन
भिलाई इस्पात संयंत्र, भिलाई नगर (छ.ग.)–490001

नरेन्द्र सिंह मेहरा
उप निदेशक (कार्यान्वयन)
एवं कार्यालयाध्यक्ष
NARENDRA SINGH MEHRA
Dy. Director (Impln.) & HOD

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (मध्य)
कमरा नं. 206, निर्माण सदन
52 ए, अरेरा हिल्स
भोपाल (म.प्र.), 462011
दूरभाष एवं फैक्स 0755 2553149

संदेश

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग की पत्रिका 'महानदी' के 'ऑपरेशन सिंदूर' विशेषांक के माध्यम से अपनी भाषा में आपसे चर्चा करते हुए मैं अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। भारत की सांस्कृतिक परंपराएं नारी के सम्मान, उसकी संकल्पशक्ति और उसकी गरिमा को केन्द्र में रखकर विकसित हुई है। 'सिंदूर' सदियों से नारी के आत्मगौरव एवं सामाजिक संरचना के स्थायित्व का प्रतीक रहा है, किंतु सिंदूर मात्र श्रृंगार ही नहीं, अपितु पीढियों से जनमानस में प्रतिष्ठित भारतीय संस्कृति, नारी शक्ति एवं उसके समर्पण का मूर्त रूप है।

अभी हाल ही में, पहलगाम हमले के बाद देश की सीमाओं एवं सीमाओं से परे जाकर चलाया गया ऑपरेशन सिंदूर भारत सरकार की दृढ इच्छाशक्ति, इसकी सूचना एजेंसियों की सटीक सूचना और हमारे तीनों सुरक्षा बलों-सीमा प्रहरियों के शौर्य, पराक्रम एवं अचूक मारक क्षमता का जीवंत उदाहरण है, जिसने दुनियां के समक्ष विकसित राष्ट्र के पथ पर अग्रसर हमारे देश की कार्यशैली की नई छवि प्रस्तुत की है, कि भारत अब केवल संस्कृति की बात नहीं करता है, अपितु इसकी रक्षा के लिए निर्णायक कदम उठाने के लिए भी कृतसंकल्प है।

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि इस ऐतिहासिक अभियान से जुड़ी स्मृतियों को स्थायी बनाने के लिए भिलाई-दुर्ग नराकास अध्यक्ष श्री चित्त रंजन महापात्र जी के मार्गदर्शन में नराकास, भिलाई-दुर्ग का राजभाषा विभाग आगे आया है एवं अपनी 62वीं अर्द्धवार्षिक बैठक के अवसर पर 'ऑपरेशन सिंदूर' विशेषांक का प्रकाशन करने जा रहा है।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि 'ऑपरेशन सिंदूर' विशेषांक न केवल पाठकों को भारतीय परपराओं से जोड़ने में सफल सिद्ध होगी, बल्कि भावी पीढ़ियों के लिए एक जीवंत प्रेरणास्त्रोत के रूप में सामने आएंगी। इस गौरवपूर्ण अवसर पर "महानदी" पत्रिका के 'ऑपरेशन सिंदूर' विशेषांक के प्रकाशन और इसकी सफलता के लिए संपादक-मण्डल एवं सभी रचनाकारों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। पत्रिका के अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

नरेन्द्र सिंह मेहरा

© BCCL 2025. ALL RIGHTS RESERVED.

चित्त रंजन महापात्र
निदेशक प्रभारी
CHITTA RANJAN MOHAPATRA
Director In-charge

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संदेश

भारत का इतिहास आदिकाल से ही माँ भारती के महान वीर सपूतों की गौरव गाथा है। अपने उच्च जीवन मूल्यों एवं आदर्शों पर दृढ़ रहते हुए अदम्य साहस व शौर्यके लिए भारतीय नायकों को जाना जाता है।

इतिहास गवाह है कि, भारत ने कभी भी किसी पर आक्रमण नहीं किया, किंतु यह भी सत्य है कि जब-जब राष्ट्र की अस्मिता, एकता और अखण्डता पर आँच आई अथवा किसी शत्रु ने इस राष्ट्र की ओर आँख उठाकर देखा, भारत ने उसका मुँहतोड़ उत्तर दिया है।

पहलगाम आतंकी हमला एक ऐसा ही दुस्साहस था, जिसका जवाब हमारी सेना ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के रूप में हमलावरों के आतंकी शिविरों को नेस्तनाबूद करके दिया। निर्दोष पर्यटकों पर हमले से देश के आम नागरिकों के मन में उपजे आक्रोश की परिणिति थी 'ऑपरेशन सिंदूर'।

हमारे देश की सेनाओं ने इस सैन्य कार्रवाई को जिस दक्षता और निपुणता के साथ पूर्ण किया वह अत्यंत ही प्रशंसनीय है। भारतीय सेनाएँ समूचे विश्व की श्रेष्ठतम सेनाओं के रूप में जानी जाती हैं। 'ऑपरेशन सिंदूर' के रूप में भारतीय सेना के कारनामे को आज सारा देश नमन करता है।

हमारे सैनिकों की वीरगाथाओं को समाहित करती रचनाओं, रचनाकारों की कलम से उपजे लेख, तथा उनकी भावनाओं का 'ऑपरेशन सिंदूर' विशेषांक के रूप में संकलन एक सराहनीय प्रयास है।

पत्रिका 'महानदी' के प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

चित्त रंजन महापात्र
चित्त रंजन महापात्र

पवन कुमार
कार्यपालक निदेशक
(मानव संसाधन)
PAWAN KUMAR
Executive Director (HR)

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संदेश

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग के सदस्य संस्थानों ने हिंदी में समस्त कार्यालयीन कामकाज की दिशा में सतत सराहनीय प्रयास किए हैं। पत्रिका 'महानदी' का प्रकाशन हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा हिंदी के प्रति अनुराग जागृत करने का एक प्रेरक माध्यम है।

समसामयिक विषयों पर केन्द्रित रचनाओं के प्रकाशन से रचनाकारों व पाठकों को हिंदी से जुड़ाव के साथ ही साथ रचनाधर्मिता तथा मौलिक लेखन की भी प्रेरणा प्राप्त होती है।

भारतीय सेनाओं ने सदैव ही वीरता के उच्च प्रतिमान स्थापित किए हैं। पहलगाम आतंकी हमले में निर्दोष, निरपराध लोगों की हत्या ने देश के आम जन को अत्यंत ही आक्रोशित कर दिया था। 'ऑपरेशन सिंदूर' ने लोगों के मन में सुरक्षा की भावना को बहाल करने तथा देश की सेनाओं पर भरोसे को सुदृढ़ करने का कार्य किया है। 'ऑपरेशन सिंदूर' का सफल व प्रशंसनीय क्रियान्वयन भारतीय सेना की एक और अविस्मरणीय गौरवगाथा है।

'ऑपरेशन सिंदूर' पर लिखे गए लेख, कविताओं तथा अन्य रचनाओं के माध्यम पाठकों के हृदय में भारतीय सेनाओं तथा राष्ट्र के प्रति गर्व की भावना अवश्य ही जागृत होगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

पवन

पवन कुमार

राजीव कुमार
महाप्रबंधक
(संपर्क, प्रशासन व जनसंपर्क एवं प्रभारी राजभाषा)
RAJEEV KUMAR
GM (L,A & PR and I/c Rajbhasha)

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संदेश

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग की पत्रिका 'महानदी' ने हमेशा से ही हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए सकारात्मक प्रयास किए हैं। यह पत्रिका, सदस्य संस्थानों के हिंदी प्रेमी सृजनशील कार्मिकों एवं उनके परिजनों की लेखनी से उपजी रचनाओं को पाठकों तक पहुँचाने का माध्यम तो है ही, साथ ही साथ समसामयिक विषयों पर चिंतन एवं विश्लेषण का भी एक अवसर है।

यह अंक भारतीय सेना के पराक्रम की गाथा 'ऑपरेशन सिंदूर' पर केन्द्रित है। हमारा भारत आदिकाल से ही शांति प्रिय तथा विश्व बंधुत्व की भावना का पोषक रहा है। किंतु संपूर्ण विश्व को एक परिवार मानने वाला, 'वसुधैव कुटुंबकम्' का संदेश देने वाला हमारा भारत सदैव आतंकवाद का प्रखर विरोधी रहा है।

पहलगाम में निर्दोष पर्यटकों की हत्या करके आतंकियों ने भारत की अस्मिता को ललकारा था। आतंकवादियों को हमारी सेना ने सही जवाब देकर ना केवल उनके आतंकी ठिकानों को नष्ट किया वरन आतंकी विचारधारा को भी यह संदेश दिया कि, भारत विरोधी हरकतें कदापि सहन नहीं की जाएंगी। 'ऑपरेशन सिंदूर विशेषांक' के माध्यम से पाठकों के हृदय में हमारी सेना सहित देश के प्रति सम्मान व समर्पण की भावना अवश्य ही जागृत होगी।

राजीव कुमार

जितेन्द्र दास मानिकपुरी
उप प्रबंधक (संपर्क व प्रशासन–राजभाषा)
JITENDRA DAS MANIKPURI
Dy. Manager (L&A - Rajbhasha)

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संदेश

रचनात्मकता सदैव ही सकारात्मकता की ओर ले जाती है। साहित्य सृजन एक ऐसा माध्यम है, जिससे न केवल व्यक्ति का, वरन संपूर्ण समाज का हित होता है। अतः लेखन को प्रोत्साहन समाज के लिए अत्यंत ही लाभदायक एवं कल्याणकारी होता है। हिंदी हमारी राजभाषा होने के साथ ही समूचे भारत की सर्वाधिक प्रचलित एवं आम जन की भाषा है। अतः हिंदी लेखन को प्रोत्साहन, हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए लाभदायक है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग की पत्रिका 'महानदी' ने समसामयिक विषयों पर केन्द्रित विशेषांकों का प्रकाशन कर पाठकों को हिंदी के साथ जोड़ने का सतत प्रयास किया है। 'महानदी' का यह अंक जो कि 'ऑपरेशन सिंदूर विशेषांक' है, पाठकों के हृदय में राष्ट्रीयता की भावना को सुदृढ़ करने के साथ ही हमारे देश की सेनाओं पर भरोसे को भी अवश्य ही मज़बूत करेगा।

'ऑपरेशन सिंदूर' के माध्यम से हमारे वीर सैनिकों ने जिस कुशलता के साथ आतंकवाद के विरुद्ध सैन्य कार्रवाई पूर्ण की, उसने समूचे विश्व को यह संदेश दिया है कि, भारत की संप्रभुता को किसी भी प्रकार की चुनौती को सहन नहीं किया जाएगा। 'ऑपरेशन सिंदूर' आज के भारत का परिचायक है।

पूर्ण विश्वास है कि, यह अंक हिंदी में कामकाज को प्रोत्साहन सहित, राष्ट्रप्रेम की भावना सुदृढ़ करने में अवश्य ही सफल होगा।

जितेन्द्र

जितेन्द्र दास मानिकपुरी

उजाले की ओर

आज हमारी प्यारी बिटिया नीरू का विवाह है। सारा घर खुशियों से खिल उठा है। इधर मैं हाथों में चाय का प्याला लेकर बैठी हूँ। अनायास ही, स्मृति-पटल पर एक फिल्म की भांति मेरा अतीत आँखों के सामने आ गया।

उस दिन नारायणजी, मुझ कम पढ़ी-लिखी को दक्षिण भारत के छोटे से गाँव से ब्याहकर भिलाई लाए थे। नारायणजी भिलाई इस्पात संयंत्र में लिपिक के पद पर थे और बीएसपी के आवंटित आवास में रहते थे। हमारी सड़क में कुल दस क्वार्टर थे जिनमें सभी प्रांतों के परिवार थे- बंगाली, गुजराती, मराठी, पंजाबी, सिख और दक्षिण भारतीय। हमारी सड़क वस्तुतः अनेकता में एकता का पर्याय थी। नारायणजी के आग्रह और प्रोत्साहन पर, उनके कार्यालय जाने के बाद, घर का काम निपटाकर मैं स्नातक की पढ़ाई करने लगी।

विवाह के साल-भर बाद सेक्टर-9 हॉस्पिटल में नीरू ने जन्म लिया। उस समय कोई सगे-संबंधी नहीं आ पाए, लेकिन पड़ोस की सखियों ने उनकी ज़रा भी कमी महसूस नहीं होने दी। कभी पड़ोस की घोष आंटी, तो कभी जोशी दीदी, तो कभी सीता बेन स्वादिष्ट भोजन पहुँचा जातीं।

मैंने स्नातक के बाद स्नातकोत्तर पूरा किया। बीएसपी के सबसे नामी-गिरामी, सेक्टर-10 स्कूल में नीरू को प्रवेश मिल गया। फ़ीस भी बहुत कम लगती। हर 2 साल में गृहनगर दक्षिण भारत और 4 साल में भारत भ्रमण की सुविधा एलटीसी का लाभ उठाते। बहुत खुशहाल परिवार था हमारा।

वह दिन मैं कभी भूल नहीं पाऊँगी। सुबह से ही मुझे चक्कर आ रहे थे, जी मितला रहा था। आखिर पास के मेडिकल स्टोर से एक किट लेकर आई और जाँच की। अरे..! मैं तो फिर से माँ बनने वाली हूँ। शाम को जब ये ऑफिस से आएंगे तो सुनकर कितने खुश होंगे, यह सोचकर ही लजा गई। खुशी-खुशी इनकी पसंद के दम-आलू, पराठे और खीर बनाई।

लेकिन आज तो काफी देर हो गई इन्हें... शाम को 06:00 बजे तक घर आ जाते थे, बार-बार घड़ी देखती हूँ। अरे 07:30 हो गया, ये अब तक नहीं आए। मुझे बहुत घबराहट होने लगी।

तभी दरवाज़े पर दस्तक हुई। मैंने भागकर दरवाज़ा खोला। सामने एक पुलिस का सिपाही खड़ा था। किसी अनजानी आशंका से दिल धड़क उठा। मैंने पूछा -"जी कहिए...?" उन्होंने कहा -"नारायणजी यहीं रहते हैं ?" मैंने कहा-" हाँ, लेकिन अभी ऑफिस से आए नहीं हैं।" वो बोला-"ड्यूटी से घर लौटते समय सड़क-दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई है, चलकर शव की पहचान कर लीजिए"। मैं चक्कर खाकर गिर पड़ी।

मुझ पर तो मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा। जैसे-तैसे सबने मिलकर उनका अंतिम संस्कार किया। उनके सहकर्मी बड़े ही भले मानुस थे। आकर मुझसे कुछ फ़ॉर्म भरवाकर ले गए। मुझे बीमे की राशि और पीएफ़ के पैसे मिल गए।

9 माह बाद मैंने एक सुंदर बालक को जन्म दिया। दोनों बच्चों को कलेजे से लगाकर फूट-फूट कर रोई। इस अभागे ने तो अपने पिता का चेहरा तक नहीं देखा। अब इन्हें संभालना मेरी ज़िम्मेदारी है। मैंने अपने भीतर एक दृढ़ता और गहरा आत्मविश्वास महसूस किया।

जिस दिन मैं नील को लेकर घर आई, उसी दिन मेरे हाथों में बीएसपी में लिपिक पद का नियुक्ति पत्र था। यही है शिक्षा का महत्व। सचमुच जब नारी शिक्षित होती है तो पूरा परिवार शिक्षित होता है। मुझे अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देकर नारी-सशक्तिकरण का उदाहरण बनना होगा।

मैंने नौकरी संभाली। नीरू और नील को अम्मा-बाबूजी ने संभाला। दोनों की शिक्षा-दीक्षा बीएसपी के स्कूल में बहुत अच्छे से होने लगी।

नीरू अब 12वीं कक्षा में पहुँच गई थी और नील कक्षा 4 में। एक दिन नीरू ने बताया कि प्राचार्य ने मुझे स्कूल बुलाया है। मैं प्राचार्य से मिली तो उन्होंने कहा- "बधाई हो! आपकी बिटिया पूरे प्रांत में अव्वल आई है"। मेरी आँखों से खुशी के आँसू बहने लगे।

नील बहुत शरारती था। ज्यादा लाड-प्यार ने उसे थोड़ा बिगाड़ दिया था। उस दिन मैंने घर आकर नील से पूछा -"नील, तुम्हारा परीक्षाफल मिल गया...?" उसने उम्मीद से परे, साफ़ झूठ कहा -"नहीं, अभी नहीं मिला।" मेरा चेहरा फक पड़ गया। प्राचार्य मुझे बता चुके थे, कि नील गणित विषय में फ़ेल हो गया है। मैं हतप्रभ रह गई। मैंने उसे कलेजे से लगा लिया और बोली-"बेटा, तू भले कम अंक ले आना, लेकिन मुझसे कभी कुछ ना छुपाना और कभी झूठ मत बोलना।" नील अवाक रह गया, उसे उम्मीद नहीं थी कि मैं उसे डाँटने के बजाय इतना प्यार करुँगी।

बस उसी दिन से नील एक बेहद गंभीर, ज़िम्मेदार और मेहनती बच्चा बन गया, जिसकी बदौलत उसे आईआईटी मुंबई में इलेक्ट्रॉनिक्स में प्रवेश मिला।

नीरू ने इंजीनियरिंग की डिग्री ली और कड़ी-मेहनत से सेल में एम.टी.टी. के पद पर चयनित हो गई। आज उसका विवाह सहकर्मी नितिन से हो रहा है। कंपनी सेल के हम आजीवन ऋणी रहेंगे जिसने हमें ही नहीं बल्कि कई परिवारों के जीवन से अंधकार, तमस को दूर कर प्रखर उजाला बिखेरा। मानसिक, आर्थिक और सामाजिक संबल प्रदान किया।

तभी छोटी ननद शालिनी की तेज़ आवाज़ से तन्द्रा भंग हुई और अपने आँसुओं को पोंछती हुई, मन ही मन नारायणजी को नमन करती हुई विवाह की तैयारियों में जोर-शोर से जुट गई।

अनुराधा धनांक
उप मंडल अभियंता (राजभाषा)
भारत संचार निगम लिमिटेड, दुर्ग

जय हिंद की सेना

महक और मानव अति प्रसन्न थे। स्कूल की लंबी छुट्टी के दौरान आज उनका दूर घूमने जाने का पारिवारिक कार्यक्रम का दिन जो आ गया था। सभी उत्साहित होकर चार पहिया वाहन में जैसे ही बैठे, दादाजी ओर पिताजी दोनों ने ही अति उत्साह से भगवान श्री गणेश जी, हनुमान जी,अपनी कुल देवी, इष्ट देवता के जय कारे लगाए। सभी को अटूट विश्वास था कि उनकी यात्रा मंगलमय होगी सभी बिना किसी भय के, प्रसन्नता से घूमते रहे।

फिर 7 मई की सुबह अचानक सब कुछ थम सा गया। भारतीय सेना ने पहलगाम हमले का बदला **"ऑपरेशन सिंदूर"** करके लिया। जिसमे दुश्मन देश के अंदर घुसकर आतंकवादी ठिकानों पर हमला करके उन्हें नष्ट कर दिया।

दादाजी ने बताया कि हमारे दुश्मन, धूर्त देश ने विकास पर नहीं सेना पर ही सारा खर्चा कर रखा है। उसने ड्रोन और मिसाइल से अनेकों हमले किये चार दिनों तक संघर्ष चला, पर हमारे देश की सरज़मीं और देशवासी पूर्ण रूप से सुरक्षित रहे।

हमारी भारतीय सेना ने सभी हमलों का मुँहतोड़ जवाब दिया। तीनों सेनाओं की संयुक्त प्रेस वार्ता ने देशवासियो को निर्भय कर दिया। अपनी यात्रा का आनंद लेते हुए जब सभी पारिवारिक सदस्य घर वापसी के लिए पुनः अपनी गाड़ी में बैठे तो ईश्वर के साथ-साथ उन्होंने **'जय हिंद, जय हिंद की सेना'** का भी जयकारा लगाया। क्यूंकि अब सुरक्षित रखने के अटूट विश्वास में अपनी भारतीय सेना भी शामिल हो चुकी थी।

अमितेष पुरोहित
इंजीनियरिंग एसोसिएट (मानव संसाधन)
सेल सिफ्रेक्ट्री यूनिट, भिलाई

भारतीय खाद्य निगम

कोसों तक जग में घूम-घूम,
कठिनाई से जूझ-जूझ,
जीव जन्तु सब तड़प रहे, दाने-दाने को तरस रहे।
लाखों लोगों की मौत हुई
जब देश में हाहाकार मचा, मानों जैसे कोहराम मचा।
समस्या विकराल हुई, मानों जैसे महाप्रलय हुआ।
तब चहुँओर से इक हुंकार हुई, संसद में वो आवाज़ गूँजी।
सन् 64 में वो नींव पड़ी, 65में आगाज़ हुआ
जिसका भाखानि (भारतीय खाद्य निगम) नाम हुआ।

आयात किया करते थे गेहूँ,
जिसका न कोई परिमाण था,
देख मवेशी दूर हो जाते
ऐसा ही ये काल था।
हरित क्रान्ति सन60 में आई
नॉरमेन के हाथों से।
कृषि व्यवस्था दुरूस्त हुई फिर,
मिट्टी-बीज के उपचारों से।
फिर तो जैसे बाढ़ आ गई,
गेहूँ-चावल के दानों की।
एक समस्या खड़ी हुई फिर,
इनके समुचित भण्डारण की।

ऐसे ही परिदृश्य में भाखानि का जन्म हुआ,
नतमस्तक होते हैं, आगे उनके,
जिन लोगों ने इसका गठन किया।
सन् 64 में नींव पड़ी, 65 में आगाज़ हुआ,
जिसका भाखानि नाम हुआ।

भाखानि है, भाखानि,
नहीं दूजा, इसका कोई सानी।
खाद्यान्न की करता निगरानी,
किसानों की रक्षा करता एमएसपी से।
पब्लिक का हित रखता पीडीएस से,
करता न कोई मनमानी, भाखानि है, भाखानि।

चाहे अमीर हो या फ़कीर या गोरा या काला,
चाहे हिन्दू या हो मुसलमान या सीमा पर डटा वीर जवान।
या जमीं या आसमाँ,
हर जगह उसकी पहुँच, हर जगह उसका निशान।
धन्य हैं वे भाई बंधु, जो यहाँ करते हैं काम।

लेह हो, लद्दाख हो या थार रेगिस्तान हो,
बंगाल की खाड़ी से लेकर कच्छ का वो रण हो।
कश्मीर से कन्याकुमारी तक हमारी छाप है,
जिसके पिलर कोई और नहीं बस हम और आप हैं।

मुख्यालय दिल्ली है इसका, बाकी सब शाखाएँ है,
डिपो से लेकर अंचल तक सब इसकी धाराएँ हैं।
डिपो है इसका आधार स्तंभ, डीओ, आरओ इसका मान है,
इसके ऊपर अंचल, मुख्यालय देश का अभिमान है।

तू अडिग है, तू अचल है तू अभिन्न है,
तू अजर है, तू देश का सिरमौर है।
कुछ और नहीं, बस तुझसे ही तो, ये खाने का कौर है।

माँ धरती की पुकार है तू,
जठरानल की झंकार है तू।
हौसला अभिमान है तू, देश की तू शान है।
हर किसान और गरीब सहित,
हर भारतवासी की जान है।

नतमस्तक होते हैं, आगे उनके,
जिन लोगों ने एफ़सीआई का गठन किया।
सन् 64 में नींव पड़ी, 65 में आगाज़ हुआ,
जिसका भाखानि नाम हुआ।

संजीव कुमार
प्रबंधक
भारतीय खाद्य निगम

विजयी भव:

घर का वातावरण उल्लास से परिपूर्ण था। चहुँओर से बधाई संदेश आते जा रहे थे। गौरवान्वित माता-पिता के चेहरे की चमक देखते ही बनती थी। उनके इकलौते होनहार बेटे का चयन आईआईटी में जो हो गया था।

परंतु रात होते-होते घर का वातावरण गहमा-गहमी भरा हो गया। माता-पिता दोनों ही ग़मगीन हो गए, क्योंकि उनका एकलौता शाश्वत बेटा एनडीए की परीक्षा में गुपचुप चयनित होकर वहाँ जाने का मन बना चुका था। माँ संध्या का तो रो-रो कर बुरा हाल हो गया। बेटा उनको रोज समझाता परंतु वह किसी भी कीमत पर उसे वायु सेना में नहीं जाने देना चाहती थी। शाश्वत ने परिवार वालों को बतलाया। अनेक बार समझाया कि 2019 की 'बालाकोट एयर स्ट्राइक' के बाद से ही उसने भारतीय वायु सेना में जाने का सपना देखा है।

फिर अचानक एक दिन पहलगाम हमला हुआ जिससे शाश्वत की माँ ही नहीं पूरा देश ही आक्रोशित हो गया। सभी ने शाश्वत को वायु सेना में जाने से मना कर दिया। फिर अचानक एक सुबह ऑपरेशन सिंदूर के तहत भारतीय सेना ने पहलगांव हमले का शानदार बदला लिया। दुश्मन देश को मुँह तोड़ जवाब दिया। तब माँ पिताजी आत्मविश्वास से भर गए।

"हमारी भारतीय सेना, विश्व की चौथी सबसे मजबूत सेना है" ये बात शाश्वत से नहीं बल्कि ऑपरेशन सिंदूर से उन्हें समझ में आई। ऑपरेशन सिंदूर की सफलता ने सभी भारतवासियों को गौरवान्वित किया।

हमारे जाँबाज़ सैनिकों ने जो आत्मविश्वास देश के अंदर हर तरह के युद्ध, संघर्ष जीत कर पैदा किया है, वो वंदनीय है तभी तो मातृभूमि की रक्षा के लिए आज शाश्वत की माँ ने भी उसे **'विजयी भव'** का आशीर्वाद देकर गर्व से विदा किया है। आज पुरे परिवार, समाज, शहर से फिर बधाई संदेशो का ताँता लग गया है।

शगल

दो अलग अलग प्यारी नवयुवतियाँ। दोनों शिक्षित समझदार। दोनों जागरूक सुबह उठते ही दोनों को अखबार पढ़ने का जुनूनी शगल। दोनों का विवाह संपन्न हुआ।

पहली विवाहिता - सुबह जल्दी उठकर अख़बार पढ़ना जारी रखी हुई थी। बहुत दिनों तक सब कुछ सामान्य, फिर एक रोज़ पतिदेव मुस्कुराते हुए बोले- तुम्हारे हाथ का गर्म पानी, चाय और नाश्ते के साथ वार्तालाप मेरा पूरा दिन बना देता है। दिनचर्या प्रेममय हुई फिर क्या समय पर अखबार पढ़ना छूट ही गया।

दूसरी विवाहिता - कुछ समय तक यहाँ भी सब ठीक रहा। प्रातः उठते ही अख़बार पढ़ने का जुनून जारी रहा, फिर एक रोज़ पति के उठते ही उनके लिए कार्य करने का मन हुआ। अखबार रखा ही था, कि पतिदेव बोले क्या तुम सुबह-सुबह अखबार लेकर बैठ जाती हो, मेरे जाने के बाद ही अखबार को हाथ लगाया करो इन फ़ालतू की ख़बरों से किसका भला होगा। मुझे सारी चीज़ टाइम पर एक जगह ही चाहिए समझ गई तुम। फिर यंत्रवत वह कार्य और परिवार में लग गई। कहीं प्रेम से, कही विरोध से। सभी की ख़ैरियत पूछते-पूछते भोली उम्र में स्त्री के हाथ से सुबह का अख़बार छूट ही गया।

रश्मि अमितेष पुरोहित
सेल रिफ्रैक्ट्री यूनिट, भिलाई

देशभक्ति की परिणति

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त जी की ये पंक्तियाँ, हर उस व्यक्ति के हृदय में राष्ट्र प्रेम की भावना जागृत करती है, जिसकी सोच में देशभक्ति का जज़्बा होता है। ऐसे ही राष्ट्र प्रेम एवं देशभक्ति की बेमिसाल परिणिति है -'ऑपरेशन सिंदूर।' यह प्रत्युत्तर है, एक क़ायराना हरकत का। 22 अप्रैल 2025 का दिन पहलगाम की शांति चीख उठी। यही वह दिन था जब इंसानियत को सरे-आम नीलाम कर दिया गया, मानवता का खून बहाया गया, धर्म पूछ कर कपड़े उतरवाए गए और कलमा पढ़ने के लिए मजबूर किया गया। आतंकियों ने 26 बेगुनाह पर्यटकों को मौत के घाट उतार दिया। उन आंतकियो ने इस बर्बरता को अंजाम देकर यह संदेश देने की कोशिश की थी, कि वह भारत में अराजकता फैला सकते हैं, लेकिन वह भ्रम में थे, उन्हें शायद यह नहीं पता था, कि यह आज का भारत है, जो प्रतिशोध लेना जानता है 'ऑपरेशन सिंदूर' के रूप में। इस आतंकी हमले ने हमले के दर्द को हमारी हिम्मत में बदल दिया, जिन माताओं-बहनों के सिंदूर को दुश्मन ने उजाड़ने की साज़िश की, उसी सिंदूर की सौगंध लेकर 'ऑपरेशन सिंदूर' की नींव रखी गई। दुश्मन की करतूत का मुँहतोड़ जवाब बना 'ऑपरेशन सिंदूर'।

पहलगाम हमला सिर्फ एक आतंकवादी घटना नहीं थी, यह समूची मानवता के प्रति एक नंगा नाच था। बर्बरता की सारी हदें पार कर दी गई थी। यह हमला सिर्फ आतंक फैलाने के लिए नहीं था, बल्कि भारत में धर्मनिरपेक्षता एवं एकता को तोड़ने की साज़िश थी। प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी की एक उच्च स्तरीय बैठक की परिणिति का नाम था - आपरेशन सिंदूर। इस ऑपरेशन का नाम सिंदूर इसलिए रखा गया क्योंकि यह सिर्फ एक सैन्य अभियान नहीं था बल्कि यह भारत की उन माता बहनों और बेटियों के सिंदूर का प्रतीक था जिनके सुहाग उस दिन आतंकियों ने छीन लिए, यह संकल्प का सिंदूर था। प्रधानमंत्री जी ने स्पष्ट निर्देश दिए कि दोषियों को बक्शा नहीं जाएगा।

'ऑपरेशन सिंदूर' 6 -7 मई की आधी रात के बाद शुरू हुआ। भारत ने पाकिस्तान और पीओके में स्थित नौ आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया, उनके कई प्रशिक्षण-शिविर, लॉन्च पैड और गोला बारूद के डिपो पूरी तरह नष्ट कर दिए। कई आतंकी और कमांडर भी मारे गए। ऑपरेशन सिंदूर की सफलता में जिन हस्तियों ने सक्रिय भूमिका निभाई, उनमें राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री अजीत डोभाल का कुशल नेतृत्व था। कर्नल सोफिया कुरैशी एवं विंग कमांडर व्योमिका सिंह के रूप में इन बेटियों ने देश की बेटियों के सुहाग उजाड़ने वालों को करारा जवाब दिया। वे सभी अज्ञात सैनिक, पायलट और विशेष बल के जवान जिन्होंने सटीक हमले किए और सुरक्षित वापस लौटे भी। ये ही असली नायक हैं, जिनकी बहादुरी और बलिदान का नाम है -ऑपरेशन सिंदूर। जिस पर पूरा देश गर्व करेगा। ऑपरेशन सिंदूर ने ये साबित कर दिया कि भारत आतंकवाद के खिलाफ कभी भी नहीं झुकेगा और अपने देशवासियों की रक्षा के लिए हमेशा तैयार रहेगा। यह एक ऐसा सिंदूर था जिसने पूरे भारत देश के मस्तक पर जीत एवं वीरता का तिलक लगाया। ये संदेश था कि भारत एक शांतिप्रिय देश है, किंतु वह अपनी एकता, अखंडता, संप्रभुता और देशवासियों की सुरक्षा से कोई समझौता कतई नहीं करेगा। हिंदुस्तान की धरती पर, जो भी आतंक फैलाएगा उसे बख्शा नहीं जाएगा। आपरेशन सिंदूर एक ऐसी अमर गाथा है जो अदम्य साहस, अटूट संकल्प और राष्ट्र के प्रति असीम प्रेम का प्रतीक है। यह भारतीय सेना के शौर्य एवं भारत के संकल्प का एक मील का पत्थर है

भूल गए थे पाक आतंकी, भारत है स्वाभिमान का देश।
शांति दूत हैं हम लेकिन, नहीं सहेंगे कोई क्लेश।

सतीश कुमार अग्रवाल
महाप्रबंधक (उत्पादन)
सेल रिफ्रेक्ट्री यूनिट, भिलाई

ऑपरेशन सिंदूर

1. ऑपरेशन सिंदूर :- 7 मई 2025 को भारतीय सेना द्वारा पाकिस्तान और पीओके (पाक अधिकृत कश्मीर) में आतंकियों के ठिकाने पर किए गए हमलों का कूट नाम था। इस ऑपरेशन का उद्देश्य 14 दिन पहले पहलगाम हमले में शहीद हुए लोगों को सच्ची श्रद्धांजलि देना था, कई महिलाओं का सिंदूर आतंकियों ने उजाड़ा था।

2. सिंदूर का पर्यायवाची :- कुमकुम, सिंदूर, लाल रंग, नाग संभूति आदि। **3. तिथि**:- 7 मई से 10 मई (4दिन)

4. स्थान :- पाकिस्तान, पीओके, भारत और कश्मीर **5. स्थिति**:- युद्ध विराम

6. नेतृत्व :- कर्नल सोफिया ,भारतीय सेना अधिकारी , प्रेस ब्रीफिंग का नेतृत्व किया विंग कमांडर व्योमिका सिंह ; एक अनुभवी हेलीकॉप्टर पायलट, जिन्होंने कर्नल सोफिया कुरैशी के साथ मिलकर इस अभियान की जानकारी मीडिया को दी।

7. मुख्य बिंदु :- 1. उद्देश्य: शहीद लोगों के परिवार की न्याय दिलाना और आतंकियों के ठिकाने को खत्म करना

2. महत्व: सिंदूर का महत्व उन महिलाओं के पति के प्रति श्रद्धांजलि है जिनकी मृत्यु पहलगाम हमले में हुई थी।

3. कार्रवाई: भारतीय वायु सेना केव 6,7 मई 2025 की रात पाकिस्तान और पीओके में आतंकवादियों के ठिकाने पर हमला कर 100 से अधिक आतंकवादी मार गिराए।

4. समन्वित प्रयास : यह तीनों सेनाओं का एक संयुक्त अभियान था जो 1971 के बाद पहली बार हुआ था!

8. परिणाम :- इस ऑपरेशन के बाद आतंकवादी विरोधी रणनीति में एक बदलाव को उजागर किया जो सीमा पार से होने वाले हमलों के विरुद्ध एक पूर्व निर्धारित और चौंकाने वाले हमले का अधिकार सुरक्षित रखता है!

ज्ञानेन्द्र सिंह राजपूत
जूनियर इंजीनियरिंग एसोसिएट
सेल रिफ्रैक्ट्री यूनिट, भिलाई

नारी का शौर्य

वर्दी में जब सूरज उगता है, साहस गूँज उठता है,
सीमा पर वीरों का पराक्रम, भारत को गर्व दिलाता है।
रणभूमि में अडिग खड़े हैं, ताकत जिनकी तूफ़ान बने,
हर आँधी को चीर निकलते, हर दुश्मन के प्राण हरें।

सैनिक भी, अधिकारी भी, अब नारी का शौर्य अनंत,
'ऑपरेशन सिंदूर' में दिखता, अब भारत का तेज़ ज्वलंत।
पराक्रम की यही कहानी, भारत माँ की रक्षा में अब,
शक्ति का यही किरदार, नर-नारी दोनों हैं तैयार।

अब बदली है युद्ध की भाषा, बदला है भारत का तौर,
ऑपरेशन सिंदूर में गूँजता, नारी-शक्ति का नया दौर
झाँसी की रानी की ज्वाला, हर बेटी के दिल में है,
सीना तान आगे बढ़े, रणकौशल उनकी नस-नस में है।

जहाँ कदम रुके थे पहले, अब वहाँ निशान उनके हैं,
आकाश, धरती, जल-सीमा- सब पर अधिकार उनके हैं।
ताक़त सिर्फ़ बाँहों में नहीं, मन की लौ में भी जलती है,
देश सुरक्षा के इस पथ पर, नारी शक्ति भी चलती है।

अनिल कुमार द्विवेदी
उप प्रबंधक, बार एण्ड रॉड मिल
भिलाई इस्पात संयंत्र

रणनीतिक कुशलता

ऑपरेशन सिंदूर इस बात का सटीक उदाहरण है कि भारत दुश्मन को युद्ध के मैदान पर धूल चटाने और मनोवैज्ञानिक तौर पर कमज़ोर करने के लिहाज़ से किस प्रकार रणनीतिक कुशलता के साथ सैन्य अभियान संचालित कर सकता है, साथ ही अपना बचाव भी कर सकता है।

ऑपरेशन सिंदूर के तहत भारत की ओर से किए गए हमलों का मकसद एकदम साफ था, यानि पाकिस्तान के कब्ज़े वाले कश्मीर और पाकिस्तान के भीतर मौज़ूद आतंकी अड्डों को नेस्तनाबूत करना। भारत इन हमलों के ज़रिए बताना चाहता था कि आतंकियों के ठिकाने जहाँ कहीं भी होंगे उन्हें बख्शा नहीं जाएगा, इसके बाद, जब इस्लामाबाद की तरफ से भारत के सैन्य और नागरिक ठिकानों पर ड्रोन व मिसाइलों से हमला किया गया, तो सभी ने देखा कि नई दिल्ली ने भी अपने लक्ष्य और मकसद को बदल दिया। पहले जहाँ भारतीय सेनाओं ने सिर्फ़ आतंकी अड्डों पर हमला किया था, वहीं पाकिस्तानी सैन्य कार्रवाई के बाद भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान के सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया और सटीक व मारक हमले करते हुए पाकिस्तानी सेना के कमांड कंट्रोल को ज़बरदस्त नुक़सान पहुँचाया। पाकिस्तान की कमज़ोर नब्ज़ को दबाने वाली और उस पर मनोवैज्ञानिक दबाव बनाने वाली भारतीय कार्रवाई की इस रणनीति ने देखा जाए तो पाकिस्तानी आतंकी संगठनों और पाक आर्मी दोनों को ही सख़्त संदेश देने का काम किया। इसमें सिंधु जल समझौते को स्थगित करने जैसे कड़े कूटनीतिक फैसले ने भी अहम भूमिका निभाई।

भारतीय वायु सेना ने पाकिस्तानी वायु सीमा में प्रवेश किए बगैर अपने क्षेत्र में रहकर ही पाकिस्तानी धरती पर मौज़ूद आतंकी अड्डों पर हमला किया, जिससे पाकिस्तान को संभलने का मौक़ा ही नहीं मिला और उसके आतंकवादी ठिकानों व आतंकी प्रशिक्षण शिविरों को सफलतापूर्वक तबाह कर दिया गया। भारत के इस सैन्य ऑपरेशन में देखा जाए तो सामूहिकता यानि सेनाओं के बीच तालमेल, संसाधनों का बेहतर उपयोग, आक्रामकता और सैन्य बलों की सुरक्षा जैसे सैन्य सिद्धांतों का बेहतर तरीक़े से पालन किया गया था।

कुल मिलाकर, भारतीय सेनाओं ने ऑपरेशन सिंदूर के ज़रिए न केवल एक 'न्यू नॉर्मल' यानि एक नया मापदंड स्थापित किया है, बल्कि दिखाया है कि सीमा पार आतंकवाद को कुचलने और आतंकवाद के प्रायोजक पाकिस्तान को सबक सिखाने के लिए किस स्तर तक जाकर सैन्य कार्रवाई को अंज़ाम दिया जा सकता है। जिस प्रकार से भारत और पाकिस्तान के बीच हुआ हालिया युद्ध अनिश्चितिता से भरा हुआ था, ऐसे में भारत ने अपनी रणनीतिक कुशलता से जहाँ एक ओर अपनी सुरक्षा पर आँच नहीं आने दी, वहीं दूसरी ओर दुश्मन को जंग के मैदान में भी धूल चटाई और उस पर मनोवैज्ञानिक रूप से भी दबाव बनाने में क़ामयाब रहा। युद्ध के दौरान सूचना का क्षेत्र बेहद महत्वपूर्ण हो जाता है और सूचना युद्ध में जीत हासिल करने के लिए भारत को काफ़ी-कुछ करने की ज़रूरत है। यानि भारत को पाकिस्तान के दुष्प्रचार की हवा निकालने और हमेशा के लिए उसके ऐसे हथकंडों को समाप्त करने के लिए नैरेटिव गढ़ने की दिशा में लगातार कार्य करते रहना चाहिए।

ऑपरेशन सिंदूर ने यह भी साबित किया है कि आज के दौर के युद्धों में तकनीक़ की भूमिका कितनी अहम है। ज़ाहिर है कि टेक्नोलॉजी की बदौलत ही दुश्मन के ठिकानों पर सटीक हमले किए जा सकते हैं और विजय हासिल की जा सकती है। समय के साथ-साथ जिस तरह से युद्ध के तौर-तरीक़े बदलते जा रहे हैं, उसमें भविष्य में जंग के मैदान पर सैन्य टेक्नोलॉजी की भूमिका और भी ज़्यादा महत्वपूर्ण हो जाएगी। ऑपरेशन सिंदूर से आतंकवाद को प्रायोजित करने वाले पाकिस्तान को जो गहरी चोट लगी है, उससे उबरने में उसे अभी काफ़ी समय लगेगा, हालांकि यह आने वाला समय ही बताएगा कि इसके बाद भी आतंकवाद को लेकर इस्लामाबाद के नज़रिए में कोई बदलाव आता है या नहीं।

विजय सिंह ठाकुर
कनीय प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
सेल रिफ्रैक्ट्री यूनिट, भिलाई

आपरेशन सिंदूर - वीरता में लिपटा न्याय

"जब पहलगाम की धरती निर्दोषों के खून से लाल हो गई, तो भारत चुपचाप नहीं रोया, बल्कि ताकत से उठ खड़ा हुआ। उस उभार को 'ऑपरेशन सिंदूर' कहा गया।

पहलगाम की शांत घाटियों में 22 अप्रैल 2025 को शांति भंग हो गई, जब आतंकवादियों ने 26 निर्दोष भारतीयों की जान ले ली। माताओं, बच्चों और पत्नियों के पास यादें और आँसू रह गए।

लेकिन भारत चुप नहीं रहा। 7 मई 2025 को तिरंगा एक बार फिर ऊँचा लहराया। हमारे वीर सैनिकों, वायु योद्धाओं और नौसैनिकों ने ऑपरेशन सिंदूर शुरू किया और एक ही रात में नौ आतंकवादी ठिकानों पर हमला किया। यह बदले की कार्रवाई नहीं थी; यह न्याय का कार्य था। हर हमले में देश के दुःख का भार और उसकी एकता की ताकत थी।

'सिंदूर' नाम संयोग से नहीं चुना गया था - यह बलिदान के पवित्र लाल, विधवाओं के दर्द और हर भारतीय को अपनी मातृभूमि से जोड़ने वाले प्रेम का प्रतीक था। जैसा कि हमारे एक अधिकारी ने कहा, "हमने नफ़रत से नहीं लड़ा - हम इसलिए लड़े क्योंकि हमारे राष्ट्र के प्रति प्रेम इसकी माँग करता था।"

'ऑपरेशन सिंदूर' को अब भारत के रक्षा सिद्धांत में एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में देखा जा रहा है, जो प्रतिक्रियात्मक उपायों से सक्रिय सटीक अभियानों की ओर बदलाव का प्रतीक है। यह भारतीय सशस्त्र बलों के साहस, एकता और तकनीकी शक्ति और एक ऐसे राष्ट्र का प्रमाण है जो आतंक के आगे झुकने से इनकार करता है।

जय हिंद।

कु. अग्रिमा दुबे
सेल रिफ्रैक्ट्री यूनिट, भिलाई

पेड़

छाँव में जिसकी सुकून बसे,
हर ऋतु में जो रंग भरे।
जड़ें उसकी धरती से जुड़ी,
शाखें नभ से बातें करें।

पत्तों में गीत बहारों के,
फूलों में खुशबू प्यारों के।

मौन खड़ा वो पथ के किनारे,
धूप में तपे, फिर भी सहारे।
ना कोई शिकायत, ना कोई शोर,
बस देता रहे जीवन की डोर।

वो देता है फल, देता है छाया,
बिन बोले सब कुछ दे जाए।
वह जल बचाए, मिट्टी थामे,
हर तूफ़ान से धरती को बचाए।

चलो फिर एक प्रण दोहराएँ,
माँ के नाम का एक पेड़ लगाएँ।
धरती माँ की गोद को सजाएँ,
प्रकृति की रक्षा में हाथ बढ़ाएँ।

राजीव कुमार मेहता
सहायक श्रेणी 1 (राजभाषा)
भारतीय खाद्य निगम

कर्म का सिद्धांत

कर्म क्या है

मन,वचन और शरीर के द्वारा जो कार्य संपादित होते हैं, वे सभी कर्म कहलाते हैं। सभी जीव अपनी प्रकृति द्वारा उत्पन्न तीन गुणों (सत्, रज और तम) के कारण कर्म करने के लिए विवश हैं। वे एक क्षण के लिऐ भी निष्क्रिय नहीं रह सकते।

हमारे कर्म ही हमारी नियति निर्धारित करते हैं। हमें हमारे कर्मों के अनुरूप फल की प्राप्ति होती है। कर्म पर हमारा अधिकार है, परन्तु कर्मफल पर हमारा अधिकार नहीं है।

भगवत गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा है :

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोस्त्वकर्मणि।।(2/47)

अर्थात, तेरा कर्म करने में ही अधिकार है, उसके फलों में कभी नहीं। इसीलिए तू कर्मों के फल का हेतु मत हो तथा तेरी कर्म न करने में भी आसक्ति न हो।

कर्म का तात्पर्य शास्त्रोचित कर्म से है, जैसे एक क्षत्रिय के लिए अन्याय के विरुद्ध युद्ध करना शास्त्रोचित कर्म है। शास्त्रों में जो कर्म निषिद्ध किए गए हैं, उन्हें विकर्म कहते हैं। जो कर्म संसार के कल्याण के लिए किए गए हों और जिनमें कर्ताभाव नहीं हो, वैसे कर्म अकर्म कहलाते हैं, जैसे एक संत द्वारा लोक कल्याण के लिए चिकित्सालय बनवाना।

कर्मफल :- तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में लिखा है-

कर्म प्रधान विश्व करि राखा।
जो जस करई, सो तस फल चाखा।।

अर्थात यह विश्व कर्म के सिद्धातों पर चलता है। जो जैसा कर्म करता है,उसे वैसा फल भोगना पड़ता है। फलप्राप्ति के दृष्टि कोण से कर्मको तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं, क्रियामान, संचित एवं प्रारब्ध।

क्रियामान :- व्यक्ति जो भी कर्म करता है, वे फल देकर ही शांत होते हैं। ऐसे सभी कर्म क्रियामान कहलाते हैं, जिनका फल तत्काल प्राप्त हो। जैसे : - हमने गर्म तवे को छुआ और हमारा हाथ जल गया।

संचित :- संचित कर्म वो कर्म हैं, जिनका फल मिलने में समय लगता है। जब तक वे फल नहीं देते, तब तक वे संचित रहते हैं। जैसे-आपने युवावस्था में अपनी माता को दुःख दिया और आपका बेटा आपको वृद्धावस्था में दुख देता है।

प्रारब्ध: अनेक जन्मों के संचित कर्म जब अपना फल देने के लिए तैयार होते है, ऐसे प्रारब्ध कर्मों को भोगने के लिये जीव को कर्म के अनुरूप शरीर प्राप्त होता है और प्रारब्ध भोगने के बाद वह शरीर खत्म हो जाता है।

कर्मयोग :- गीता के प्रथम 6 अध्याय में कर्मयोग की व्याख्या की गई है। ईश्वर के निमित्त, समत्व भाव से, बिना किसी फल की कामना के, आसक्ति को त्यागकर जो कर्म किया जाता है, वह कर्मयोग है। श्रीकृष्ण कहते है कि जैसे अज्ञानी, आसक्ति पूर्वक कर्म करते है, वैसे ही ज्ञानी को बिना आसक्ति के लोककल्याण की दृष्टि से कर्म करना चाहिए।

सौरभ कुमार राजा
महाप्रबंधक
सेट –सीईटी

जो कर्मयोग का पालन करते हुए, इस संसार में निरन्तर कर्म करते रहते हैं, लेकिन उसमें आसक्त नहीं होते, वे श्रेष्ठ हैं। इसीलिए ज्ञानीजन फल की आकांक्षाओं और ममत्व की भावना से मुक्त होकर अपने मन और बुद्धि को संयमित रखते हैं। वे कर्म में संलग्न रहते हुए भी कर्मबंधन में नहीं पड़ते। जैसे मिथिला के जनक एक राजा का दायित्व निभाते हुए भी उसमे आसक्त नहीं थे।

इस्पात उद्योग के सिपाही

भारत का इस्पात उद्योग देश की प्रगति का प्रमुख आधार है। विशाल प्लांट, गगनचुंबी संरचनाएँ, धधकती भट्ठियाँ और लगातार चलने वाली भारी मशीनें–ये सब रोज़ाना हमारे विकास की दिशा निर्धारित करते हैं। लेकिन इन सबके पीछे एक और महत्वपूर्ण कहानी है–उन कर्मयोगियों की, जो इस उद्योग की धड़कन हैं। वे जिनके दिन की शुरुआत आग की तपिश और मशीनों की गर्जना से होती है और जिनकी रातें भी कई बार उसी तनाव के साथ बीतती हैं।

काम की चुनौती – ध्यान, समर्पण और सतर्कता की परीक्षा–

स्टील प्लांट का माहौल बाहरी दुनिया से बिल्कुल अलग है। फर्नेस के सामने खड़े होकर काम करना, पिघले हुए इस्पात की लपटों को महसूस करना, ऊँची-ऊँची मशीनों के बीच तालमेल बनाना–यह सिर्फ़ एक नौकरी नहीं, बल्कि हर पल सतर्क रहने की आवश्यकता है। एक छोटी-सी चूक भी गंभीर स्थिति बना सकती है, इसलिए हर कर्मयोगी अपने काम में पूरी मानसिक उपस्थिति के साथ जुटा रहता है। शिफ्ट चाहे सुबह की हो या रात की–ध्यान, धैर्य और संयम उनकी सबसे बड़ी ताकत होती है। वे प्लांट की स्थिति के बारे में सोचते रहते हैं–क्या मशीनें सुचारु थीं, कल की तैयारी कैसी होगी, किसी सहकर्मी को सहायता की आवश्यकता तो नहीं।

गर्मी और मशीनों का शोर–हर दिन की अदृश्य चुनौती–

फर्नेस के पास खड़े रहना सिर्फ़ नौकरी नहीं, बल्कि सहनशक्ति की परीक्षा है। वहाँ की गर्मी, मशीनों की तेज़ आवाज़और लगातार सतर्क रहने का दबाव–ये सभी मिलकर एक कर्मचारी के दिन को अपेक्षा से अधिक कठिन बनाते हैं। लेकिन इस कठिन माहौल में ही वे अपना सर्वश्रेष्ठ देते हैं। उनका धैर्य और अनुशासन ही उद्योग के सुचारू संचालन की आधारशिला है।

परिवार– उनकी सबसे बड़ी शक्ति, संतुलन और संबल–

स्टील उद्योग का काम डिमांडिंग है, लेकिन जीवन सिर्फ़ उद्योग नहीं–परिवार भी होता है और यही परिवार इन कर्मयोगियों का सबसे बड़ा आधार बनता है। शिफ्टों के कारण कभी त्योहार छूट जाते हैं, कभी बच्चे का स्कूल प्रोग्राम, तो कभी परिवार के साथ बिताया समय कम पड़ जाता है। फिर भी, हर दिन जब वे घर लौटते हैं, उन्हें मिलता है– पत्नी या पति का समझदारी भरा स्नेह, बच्चों की आँखों में गर्व, माता-पिता की दुआएँ, परिवार का बिना बोले दिया जाने वाला समर्थन। यही सहयोग उन्हें अगले दिन फिर से उसी उत्साह के साथ काम पर जाने की ताकत देता है। परिवार न केवल उनकी थकान को समझता है बल्कि उनके काम की गंभीरता और ज़िम्मेदारी को भी जानता है। घर की यह भावनात्मक सुरक्षा उन्हें मानसिक ताकत देती है, और यही ताकत उन्हें उद्योग में बेहतर प्रदर्शन करने में मदद करती है। जब वे छुट्टी के दिन बच्चों के साथ समय बिताते हैं या परिवार के बीच हँसी-खुशी के पल जीते हैं, तो उन्हें लगता है कि ज़िन्दगी हर मुश्किल के बावजूद खूबसूरत है। काम कठिन है, लेकिन परिवार की मुस्कान इसे आसान बना देती है। स्टील उद्योग के कर्मचारी सिर्फ़ उद्योग के लिए नहीं, बल्कि देश के विकास के लिए भी अनिवार्य हैं। हर रेल की पटरियाँ, हर पुल, हर इमारत कहीं न कहीं उनकी मेहनत से गढ़ी जाती है। उनका हर दिन राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया का एक हिस्सा है। और इसी मेहनत को पूरा रूप देता है–घर में उनकी प्रतीक्षा कर रहा परिवार, जो बिना कहे उनका हौसला बढ़ाता है।

शुभम किशोर मिश्रा
वरीय प्रबंधक (अनुरक्षण),
सेल रिफ्रैक्ट्री यूनिट, भिलाई

मुझे बुला लो

अगर कहा सुनी हो जाए, तो झगड़ा करवा लो।
मैं तो इसमें माहिर हूँ, मुझे बुला लो।
ज़िन्दगी एक जुआ है, सुख-दुःख का कुआँ है।
दाँव-पेंच जानते हो, तो किस्मत आजमा लो।
मैं तो शकुनि हूँ, पासा फेंकवा लो।
दुनियाँ की अकल मारी गई है, वह तो अनाड़ी है।
आज की राजनीति भी सब्जी की बाड़ी है।
नेताजी खरपतवार हैं, दवाई छिड़कवा लो।
मैं तो दावानल हूँ, मुझे बुला लो।
पार्टी से निकाल दो, कोई बात नहीं।
चेहरे से तनिक भी उदास नहीं।
ऊपर से बन जाते हैं बागी,
महानता तो इनकी देखिए, लगते हैं बड़े त्यागी।
गाँव-गाँव, गली-गली चिल्लाते हैं।
जीत गए तो कोई बात नहीं,
मगर हार कर भी खुशियाँ मनाते हैं।
काम नहीं करते, ये निठल्ले हैं।
जो विषमता की बीज समाज में बोते हैं।
ये संसद में तो गूंगे हैं, पर यहाँ आकर रोते हैं।

२. कमल

मैं कीचड़ में खिला कमल हूँ।
पंक में अंकुरित हुआ बना पंकज।
जल में स्फुटित हुआ बना जलज।
सुलझा हुआ गीत न कविता हूँ।
मैं उलझी हुई ग़ज़ल हूँ।
मैं पुष्पों का राज हूँ
वतन का ताज हूँ।
अभाव में बदला स्वभाव हूँ।
भारतीयों के लिए आन का भाव हूँ।
मैं सुलझा हुआ पजल हूँ।
मैं कीचड़ में खिला कमल हूँ।

पी. आर.साहू
वरिष्ठ सांख्यिकी अधिकारी
राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय, दुर्ग

ऑफ़िस लाइफ़

सुबह की किरणें दे आवाज़,
उठ चलें अपने ही रिवाज़।

ट्रैफ़िक की हलचल, रास्तों की भीड़,
फिर भी मन में सपनों की रीढ़।

डेस्क पे बैठे, स्क्रीन जगाए,
काम के सागर में दिन उतर जाए।

मेलों की बौछार, डेडलाइन्स की टक्कर,
कभी लगे मुश्किल, कभी हो मन फक्कड़।

मीटिंग की बातें, शब्दों का खेल,
कभी मीठी धुन, कभी थोड़ा झमेल।

लंच की घड़ी में सुकून का स्वाद,
दोस्तों संग हर बोझ हो हल्का सा याद।

फिर शाम ढले जब काम सिमट जाए,
दिल में संतोष का दीप जल जाए।

ऑफ़िस लाइफ़ यही सिखाती,
रोज़ नई मंज़िल, रोज़ नई थाती
मेहनत का रास्ता लंबा सही,
पर हर कदम पर खुशी कहीं न कहीं।

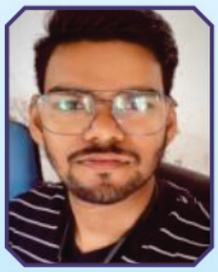

साहिल भारती
भारतीय खाद्य निगम, दुर्ग

विकास की राह पर भारत

भारत एक ऐसा देश है जहाँ सुबह की पहली किरण केवल उजाला ही नहीं लाती, बल्कि हजारों वर्षों पुरानी संस्कृति की सुगंध भी साथ लाती है। यहाँ विकास की चमकदार इमारतों के बीच भी मंदिरों की घंटियाँ गूंजती हैं और डिजिटल स्क्रीन की रोशनी के बीच भी दीपक की लौ अपना अस्तित्व बनाए रखती है। यही भारत की सुंदरता है–आधुनिकता और परंपरा का अनोखा संगम।

भारत ने समय के साथ बदलना जरूर सीखा, पर बदलते हुए अपनी जड़ों का दामन कभी नहीं छोड़ा। जब दुनिया तकनीक की ओर भाग रही थी, तब भारत ने भी डिजिटल इंडिया, मेक इन इंडिया, और स्टार्टअप संस्कृति की राह पकड़ी। लेकिन इसी के साथ उसने योग, आयुर्वेद, शास्त्रीय संगीत, लोककला, त्यौहारों और परिवार-संस्कृति की आत्मा को जीवित रखा। यही संतुलन भारत को अन्य राष्ट्रों से अलग पहचान देता है।

यहाँ विकास केवल आर्थिक तरक्की नहीं, बल्कि मन और आत्मा के विकास से भी जुड़ा है। आधुनिक समय की तेज़ रफ्तार ज़िन्दगी में भी भारत का मन आध्यात्मिकता से बंधा रहता है। शायद इसी कारण जब दुनिया थककर समाधान खोजती है, वह भारत की ओर लौटती है–शांति पाने और जीवन का अर्थ समझने के लिए।

भारत के शहर आज विश्वस्तरीय तकनीकी केंद्र बन गए हैं, पर गाँवों में आज भी मिट्टी की सौंधी महक और लोकगीतों की मधुर धुन वही है। नई पीढ़ी मोबाइल और लैपटॉप से जुड़ी है, पर पूजा का दिया, त्योहारों की परंपरा और परिवार की गर्माहट अभी भी उनके जीवन में है। यही मिश्रण आधुनिक भारत का असली स्वरूप है।

दुनियाँ के कई देश विकास के नाम पर अपनी पहचान खो बैठे, लेकिन भारत इसके विपरीत अपनी संस्कृति को और अधिक वैश्विक बना सका। योग अंतरराष्ट्रीय बन गया, भारतीय भोजन विश्वभर में लोकप्रिय हो रहा है, बॉलीवुड और भारतीय संगीत कई देशों की पसंद बन चुके हैं।

भारतीय प्रवासी आज दुनियाँ के हर कोने में भारत की संस्कृति को जीवित रखे हुए हैं। वे आधुनिकता के साथ चलते हैं, पर अपने घरों में दीपावली की रोशनी, नवरात्रि के गरबा और ईद की नमाज़ आज भी उतनी ही शिद्दत से मनाते हैं।

वैश्वीकरण की तेज़ हवा कभी-कभी हमें अपनी भाषा, मूल्यों और परंपराओं से दूर करने की कोशिश करती है, पर भारत की मिट्टी इतनी गहरी है कि वह हर बार हमें अपनी ओर वापस खींच लेती है। नई पीढ़ी यह समझ रही है–वह विज्ञान पढ़ती है, पर आत्मा के प्रश्नों का उत्तर गीता में ढूँढ लेती है; वह सूट पहनती है, लेकिन त्योहारों पर पारंपरिक परिधान भी उसी गर्व से धारण करती है।

भारत का भविष्य तभी उज्ज्वल होगा जब यह संतुलन कायम रहेगा–जहाँ विकास परंपरा की शक्ति से प्रेरित हो और परंपरा आधुनिकता से ऊर्जा पाए। भारत को आगे बढ़ना है, लेकिन जड़ों को साथ लेकर। क्योंकि कोई भी वृक्ष तभी ऊँचा उठता है, जब उसकी जड़ें मजबूत, गहरी और जीवित होती हैं।

और भारत की ये जड़ें... हजारों वर्षों की सभ्यता, संस्कृति और ज्ञान में धड़कती हैं–शांत, अटूट, और विश्व को राह दिखाती हुई।

"जड़ों से जुड़ा भारत"

मिट्टी की खुशबू में बसी,
एक पुरानी-सी कहानी है।
तकनीक की उड़ान भले हो ऊँची,
जड़ों में भारत की रवानी है।

आधुनिकता का चाँद चमकता,
पर सूरज बन संस्कृति जगाती है;
विकास की राह में साथ लिए,
भारतीयता अपनी पहचान बनाती है।

कु. तनया र. गडलिंग
तकनीकी सहायक
भारतीय खाद्य निगम

सच्ची मित्रता-औपचारिकताओं से दूर एक रिश्ता

कुछ रिश्ते खून के नहीं होते, फिर भी खून से ज्यादा गहरे होते हैं। कुछ लोग हर रोज़ नहीं मिलते, फिर भी हर पल दिल के सबसे पास होते हैं। उन्हें ही तो हम 'मित्र' कहते हैं।

सच्ची मित्रता वही होती है, जो औपचारिकताओं से परे होती है। जिसमें न दिखावे की आवश्यकता होती है, न रोज़ "कैसे हो" पूछने की। जहाँ आप सामने कुछ भी बोल सकते हैं, हँसी-मज़ाक कर सकते हैं – लेकिन अगर वही बात कोई और कह दे, तो सहन नहीं होती।

मित्रता में उपकार नहीं होता, फिर भी हर छोटी-बड़ी सफलता पर आत्मिक प्रसन्नता होती है। जैसे उसने नहीं, हमने स्वयं कुछ पा लिया हो। एक सच्चा मित्र बिना कहे समझ लेता है कि आपको क्या चाहिए, और बिना नाम लिए आपकी मुश्किल आसान कर देता है। और जब आप पूछें, तो मुस्कुरा कर कह दे: "अरे, कुछ नहीं यार!"

मित्रता में संदेह नहीं होता, पर जब गलती हो, तो वही आईना भी दिखाता है – बिना चीखे, बिना चिल्लाए। कभी टेढ़ा लगता है, पर जब कोई और वही बात कहे तो हम कह उठते हैं: "टेढ़ा है मगर मेरा है।"

यदि आपके बचपन का कोई मित्र मिले और आपको आपको बचपन में दिए गए उल्टे सीधे नाम से बुलाए, गाली दे तो वो गाली और दोस्तों को दिया नाम कितना अच्छा लगता है।

कबीर दास जी ने कहा है : -

जब मैं था, तब हरि नहीं, अब हरि है, मैं नाहिं।

प्रेम गली अति साँकरी जा में दोऊ ना समाहि।

मैं मानता हूँ कि मित्रता प्रेम की पर्यायवाची है.. मित्रता अहं को समाप्त कर देती है। यदि हमारे बीच में अहं है तो इसका मतलब है कि हम अभी सही मायनों में मित्र नहीं बन पाए हैं। सर्वाधिक विशेष बात ये है... कि मित्रता मिलने की मोहताज नहीं होती। वो हृदय में रहती है – सादी, सुदृढ़ और सुरक्षित।

रिश्ते अक्सर रिसते हैं, मित्रता सदा सुगंध बनकर महकती है। मित्रता का उदाहरण हमें श्रीरामचरितमानस में भी मिलता है। प्रभु राम और केवट की मित्रता। केवट ने अपने मित्र प्रभु राम को अपनी नाव पर बिठा कर नदी पार कराया। वनवास समाप्त होने को है। प्रभु राम अति शीघ्र अयोध्या पहुँचना चाहते थे, पर फिर भी वो अपने मित्र केवट को नहीं भूले और नाव में बिठाने वाले अपने मित्र को पुष्पक विमान में बिठा कर अयोध्या ले गए।

महाभारत में सूत पुत्र कर्ण ने केवल और केवल मित्रता के कारण भगवान कृष्ण तक की बात नहीं मानी और मृत्यु पर्यंत दुर्योधन का साथ नहीं छोड़ा।

आज आवश्यकता है, कि हम मित्रता को सस्ती ना बनाएँ, उसे व्हाट्सअप और फेसबुक में सीमित ना करें। मित्रों से मिलें, बात करें। वे आपको तनावमुक्त रखेंगे... असली मित्रता का महत्व कल था, आज भी है... कल भी रहेगा।

कौशल किशोर शर्मा
महाप्रबंधक (सामग्री प्रबंधन),
भिलाई इस्पात संयंत्र, भिलाई

छत्तीसगढ़ की खाद्यान्न शक्ति और विकसित भारत 2047 का संकल्प

धान की खुशबू छत्तीसगढ़ की, सुनाती उन्नति की तान,
किसानों का श्रम बनता है भारत का गौरव, भारत की शान।

भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) ने इंडिया इंटरनेशनल ट्रेड फेयर (IITF) 2025 में, भारत मंडपम के हॉल नंबर 6 में एक विशेष मंडप स्थापित किया। इस मंडप ने 14 से 27 नवंबर 2025 तक आयोजित मेले में देश की खाद्यान्न यात्रा और आधुनिक, पारदर्शी तथा नागरिक-केंद्रित खाद्य सुरक्षा व्यवस्था को दर्शाया।

इस वर्ष एफसीआई के मंडप में विशेष रूप से छत्तीसगढ़ की भूमिका और योगदान को प्रमुखता दी गई, जिसने अपने सशक्त धान उत्पादन और किसान-केंद्रित नीतियों के कारण पूरे देश में "धान का कटोरा" के रूप में पहचान बनाई है। मंडप की थीम "किसानों का सम्मान, भारतीय खाद्य निगम का अभिमान" और "एक भारत, श्रेष्ठ भारत" के भाव को प्रतिध्वनित करती है।

छत्तीसगढ़: भारत की खाद्यान्न सुरक्षा का मजबूत स्तंभ-

मंडप में छत्तीसगढ़ की पारंपरिक धान खेती, सामुदायिक सहयोग से संचालित संग्रहण प्रणाली, और राष्ट्रीय खाद्य भंडार में राज्य के बड़े योगदान को प्रभावी रूप से प्रदर्शित किया गया। छत्तीसगढ़ का आधुनिक गोदाम प्रबंधन, डिजिटल भुगतान व्यवस्था, किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य का सुनिश्चित लाभ, और SILO जैसी वैज्ञानिक भंडारण तकनीकों को अपनाना इसे भारत की खाद्यान्न आपूर्ति श्रृंखला की रीढ़ बनाता है।

केन्द्रीय मंत्री का भ्रमण और सराहना-

18 नवंबर 2025 को उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण तथा नई एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री प्रह्लाद जोशी ने एफसीआई मंडप का भ्रमण किया। उन्होंने खुले बाजार बिक्री योजना (OMSS) के माध्यम से गेहूँ और चावल की उपलब्धता व मूल्य स्थिरता बनाए रखने में एफसीआई के प्रयासों तथा छत्तीसगढ़ जैसे प्रमुख राज्यों की महत्वपूर्ण भूमिका की सराहना की।

इस अवसर पर सचिव (खाद्य) श्री संजीव चोपड़ा, एफसीआई के सी&एमडी श्री आशुतोष अग्निहोत्री, कार्यकारी निदेशक (उत्तर क्षेत्र) श्री अजीत कुमार सिन्हा सहित मंत्रालय और एफसीआई के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

आधुनिक तकनीक, डिजिटल पहल और पारदर्शिता का प्रदर्शन-

मंडप में आधुनिक गोदामों के मॉडल, डिजिटलीकृत निगरानी प्रणाली, सप्लाई-चेन की दक्षता, और टिकाऊ उपायों को आकर्षक तरीके से दर्शाया गया है। विशेष रूप से छत्तीसगढ़ में लागू पारदर्शी खरीद प्रक्रिया, त्वरित भुगतान व्यवस्था और किसानों तक सीधा लाभ पहुंचाने वाली प्रणालियाँ आगंतुकों के लिए प्रमुख आकर्षण बनीं।

छत्तीसगढ़ का चावल पहली बार एक ही मंच पर-

मंडप में ओडिशा, छत्तीसगढ़, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, पंजाब और हरियाणा–इन छह राज्यों से प्राप्त एफसीआई चावल की खुदरा बिक्री भी की गई। छत्तीसगढ़ का उच्च गुणवत्ता वाला चावल बड़ी संख्या में आगंतुकों द्वारा पसंद किया गया। चावल 28.90 रु. प्रति किलो और 30.90 रु. प्रति किलो की दर से उपलब्ध कराया गया, पहले 4 दिनों में ही लगभग 1000 किलोग्राम चावल की बिक्री हो गई।

देशवासियों के लिए गर्व का विषय

युवा, विद्यार्थी, महिलाएँ और आम नागरिकों से एफसीआई मंडप का अवलोकन करने का आग्रह किया गया ताकि वे भारत के खाद्य क्षेत्र में हो रहे व्यापक परिवर्तन को निकट से समझ सकें। 'वोकल फॉर लोकल' के प्रधानमंत्री के आह्वान को आगे बढ़ाते हुए छत्तीसगढ़ के मॉडल ने पूरे देश के लिए प्रेरणा का स्रोत प्रस्तुत किया। एफसीआई ने इस अवसर के माध्यम से खाद्य सुरक्षा को सुदृढ़ करने, किसानों को सशक्त बनाने, पारदर्शिता सुनिश्चित करने और उच्च गुणवत्ता वाले खाद्यान्न देश के हर घर तक पहुँचाने के अपने संकल्प को पुनः दोहराया–जो विकसित भारत @ 2047 के राष्ट्रीय लक्ष्य का महत्वपूर्ण आधार है।

बुद्धभूषण दिलीप यशवंते
तकनीकी सहायक
भारतीय खाद्य निगम

पहाड़ी मैना : छ.ग. का राजकीय पक्षी

प्यारा है इस वन अंचल का, भौगोलिक स्वरूप।
जैव विविधता और बहुलता, सुंदरता अनूप।
इक्तालीस दशमलव एक तीन फ़ीसदी वनक्षेत्र।
अनुपम सुंदरता अंचल की, तृप्त होते नेत्र।।

पक्ष दूसरा भी है इसका, वन्य-जीव शिकार।
अब विलुप्त होने प्रजाति कुछ, पहुँच चुके कगार।
हैं वनभैंसा पहाड़ी मैना, अतीव संकटग्रस्त।
संरक्षण हित कर रहा है, राज्य प्रयास समस्त।।

दुर्लभ कुछ पशु-पक्षी पहुँचे, खतरे की कगार।
वन्यजीव संरक्षण करने, अधिनियम तैयार।
दो हज़ार इक ईस्वी सन् में, तिथि जुलाई चार।
राजकीय पशु-पक्षी घोषित, किए नव सरकार।।

घोषित किया पहाड़ी मैना, राज्य-पक्षी मान।
पक्षी जो अस्तित्व खो रहा, अब मिली पहचान।
बोली-भाषा नकल करे यह, स्वर कोकिला जान।
राजकीय पद प्राप्त सारिका, है राज्य की शान।।

सुंदर कोमल भावुक मैना, स्वर मनुज की भाँति।
जीवशास्त्र में विवरण इनके, प्राप्त चार प्रजाति।
ग्रेटि पेनिन्सुलेरिस इनका, जीवशास्त्रीय नाम।
जो बस्तरिया वन-वृक्षों के, छतों पर हैं धाम।।

श्याम रंग चमकीला तन है, पीत कलगी-पैर।
डैनों पर चकता सफेद है, कर सघन वन सैर।
आच्छादित रहते थे इनसे, बस्तर के पहाड़।
अब सीमित कुछ ही क्षेत्रों में, पास अबूझमाड़।।

सहज नकल करती सटीक है, मनुज की आवाज।
विद्यमानता हित ख़तरा है, यही प्रतिभा आज।
लोग समृद्ध घरों में रखते, पालने की साध।
अर्थ लाभ हित करे तस्करी, प्राण हरते व्याध।।

वंश-वृद्धि हित वन विभाग ने, किए वृहद प्रयास।
तीन दशक में लाखों खर्चे, फल नहीं आभास।
फिर होगा व्यवहार-अध्ययन, रहवास पर शोध।
शासन-जनता मिलकर समझें, संरक्षण सुबोध।।

भागवत राम निषाद
मास्टर ऑपरेटर
फाउण्ड्री एवं पैटर्न शॉप
भिलाई इस्पात संयंत्र

पचास के बाद : जीवन की फरियाद

जीवन उस क्षण उजास से भर उठता है जब मनुष्य अपना ध्यान बाहर से हटाकर भीतर की उस ज्योति में लगाता है जो कभी क्षीण नहीं होती। शास्त्रों में प्रार्थना है - **'असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय'** - यह केवल मंत्र नहीं, आत्म-विकास का सूक्त है। जीवन प्रत्येक दिन हमें संकेत देता है कि सत्य की राह पर चलना ही वास्तविक उन्नति है और प्रकाश उसी को मिलता है जो शंकाओं के बोझ को उतारकर अपने कर्म को पूर्ण निष्ठा से करता है। 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' केवल उपदेश नहीं, बल्कि एक सशक्त विवेक है जो बताता है कि निष्काम कर्म ही मनुष्य को उन ऊँचाइयों तक पहुँचाता है जहाँ फल स्वयं विनम्र होकर उसके द्वार पर खड़े मिलते हैं। कभी-कभी जीवन ऐसे प्रश्न पूछता है जिनका उत्तर कहीं बाहर नहीं, हमारे भीतर ही सोया रहता है। एक व्यक्ति ने संत से पूछा - 'गुरुदेव, शांति कहाँ मिलती है?' संत ने मुस्कुराते हुए कहा - 'जहाँ मन उलझना छोड़ देता है, वहीं शांति मिलती है।' यही कारण है कि शास्त्र कहते हैं - 'न हि क्रोधसमो रिपुः' - क्रोध से बड़ा कोई शत्रु नहीं; और 'आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महानरिपुः' - आलस्य शरीर के भीतर रहने वाला अदृश्य पर घातक शत्रु है। जीवन का संदेश सरल है - मुस्कुराओ, उठो, और बिना शिकायत आगे बढ़ो। कभी एक हल्का-फुल्का चुटकुला भी मन का बोझ कम कर देता है। टीचर ने छात्र से पूछा - समझदार कौन होता है? छात्र बोला - जो अपनी गलती पर चुप हो जाए और दूसरे की गलती पर भी चुप करा दे! यह हास्य जीवन की गहरी बात कह देता है कि प्रतिक्रिया देने की जगह प्रतिक्रिया का चुनाव ही विवेक है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' भारतीय चिंतन का वह वाक्य है जो बताता है कि मानवता एक ही परिवार है। 'परोपकाराय सतां विभूतयः' सज्जनों का धन और सामर्थ्य दूसरों के हित में ही सिद्ध होता है। 'अहिंसा परमो धर्मः' यह केवल सैद्धांतिक वाक्य नहीं, बल्कि आत्म-अनुशासन की वह भावना है जो मनुष्य की श्रेष्ठता का परिचय देती है। और जब हृदय में करुणा का उदय होता है, तब समूची पृथ्वी अपना विस्तार खोकर एक ही घर की तरह लगने लगती है। जीवन का सौंदर्य संघर्ष के बाद प्राप्त प्रकाश से ही निखरता है। एक शेर कहता है -

यूँ ही नहीं होती रोशनियों की कीमत यहाँ,
जलना भी पड़ता है अपने ही अँधेरों से ऊपर उठकर।

अंधकार से संघर्ष ही आत्मबल है और वही अंततः प्रकाश का आरंभ बनता है। जीवन के गहरे प्रश्नों को सरलता से समझने के लिए एक प्रश्न-उत्तर मन में उतर जाते हैं।

प्रश्न: जीवन में सबसे कठिन क्या है?

उत्तर: अपने भीतर छिपे भय को जीतना।

प्रश्न: और सबसे सरल क्या है?

उत्तर: मुस्कुराना - क्योंकि मुस्कान वह प्रकाश है जो सबसे पहले स्वयं पर गिरता है।

जीवन प्रवाह है, बोझ नहीं। वह तब सुंदर बनता है जब हम अपने भीतर विनम्रता, हास्य, करुणा और निष्काम कर्म के दीपक जलाए रखते हैं। अब बात जीवन के उस आध्यात्मिक मोड़ की जहाँ प्रौढ़ता और अनुभव हाथ थामकर चलते हैं। हाल ही में एक मित्र ने '50 प्लस' नामक समूह में मुझे जोड़ते हुए मज़ाक किया कि जल्दी सदस्यता के लिए अतिरिक्त शुल्क देना पड़ेगा। उनका यह विनोद मुझे गहरे चिंतन में ले गया। कहा गया है - 'वार्धक्य आकर कभी नहीं जाता, सब कुछ ढलता है, बस बुढ़ापा नहीं ढलता।' इस सत्य को स्वीकारना ही परिपक्वता की शुरुआत है। उम्र बढ़ती है, पर बूढ़ा वही होता है जो मन को जड़ कर ले। यदि आनंद, चेतना और जिज्ञासा जीवित रहे तो हर पड़ाव नया खिल उठता है। वृद्धावस्था शाप नहीं, अनुभवों का वसंत है - एक ऐसा काल जहाँ जीवन का शोर धीमा हो जाता है और भीतर का स्वर अधिक स्पष्ट सुनाई देता है। खटपट और झटपट दोनों को छोड़ देना यही समय सिखाता है। जल्दबाज़ी कभी-कभी जीवन का सबसे बड़ा भ्रम होती है। एक ट्रक के पीछे पढ़ा

वाक्य याद आता है - 'जिन्हें जल्दी थी, वे चले गए।' इसी तरह एक वृद्ध व्यक्ति से बीमा एजेंट ने कहा - थोड़ा निवेश करेंगे तो दस गुना लाभ मिलेगा। वृद्ध ने उत्तर दिया - मैं उस उम्र में हूँ जहाँ केले भी कच्चे नहीं खरीदता। यह उत्तर केवल हास्य नहीं, गहन आत्मबोध है कि जीवन के कुछ पड़ाव अपेक्षाओं से अधिक स्वीकार का समय होते हैं। स्वयं को सुधारने की आवश्यकता हर उम्र में रहती है, पर पचास के बाद यह स्वतः प्रकट होने लगता है। एक अधिकारी बोले - रिटायरमेंट के बाद सभी से बदला लूँगा। मैंने कहा - अब बदला नहीं, बदलने का समय है। भगवद्गीता कहती है - 'उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्' - मनुष्य को स्वयं अपने द्वारा ही ऊपर उठना चाहिए। स्वामी दयानंद कहते थे - केवल सफेद बाल होना वृद्धावस्था नहीं, विवेक और ज्ञान का उदय ही वृद्धत्व की पहचान है। भारतीय दृष्टि में चार आश्रमों का सारा उद्देश्य यही है कि जीवन बाहरी कर्म से धीरे-धीरे आंतरिक साधना की ओर बढ़े। गृहस्थ के बाद वानप्रस्थ की शुरुआत संयम, ध्यान और आत्मसमर्पण की ओर जाने की होती है। रघुवंश में महाकवि कालिदास ने कहा कि राजा दिलीप युवावस्था में ही वृद्ध हो गए थे - अर्थात वे कम आयु में ही धर्ममय हो गए थे। पचास के बाद का समय चिंतन और ठहराव का होता है। ईशोपनिषद् कहता है - 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः' - त्याग ही आनंद देता है। एक मित्र ने कहा - अब याददाश्त कमजोर हो गई है, चश्मा ढूँढते रहे और वह आँखों पर था। मैंने कहा- अब चीजें याद रखने से अधिक भूल जाने की कला सीखिए - शिकायतें, ईर्ष्या, गिले और पछतावे भूल जाएँ। शायर ने कहा है-

बहुत खुश नसीब हूँ कि अक्सर बातें भूल जाता हूँ,
मैंने सब कुछ याद रखने वालों को बहुत परेशान पाया है।

मिथिला नरेश जनक का प्रसंग बताता है कि भीतर की स्थिरता कैसी होती है। राज्य में आग लगी, लोग भागे, पर जनक ध्यान में बैठे रहे। उनसे पूछा गया - राज्य जल रहा है और आप शांत हैं? उन्होंने कहा - जो जल रहा है वह मेरा नहीं। मेरा 'मैं' भीतर है। यही आत्म-स्थिति वृद्धावस्था की परिपक्वता है। पचास के बाद का जीवन अंत नहीं, अनुभव का महामार्ग है। अब व्यक्ति तुलना से नहीं, अपने अंतर्मन से संवाद करता है। तैत्तिरीय उपनिषद् कहता है - 'आनंदो ब्रह्मेति व्यजानात्' - आनंद ही ब्रह्म है। इसलिए वृद्धावस्था कमजोरियों का नहीं, करुणा, ज्ञान और सहजता का उत्सव है। कुछ सरल सूत्र जो जीवन को मधुर बनाए रखते हैं -

1. प्रतिदिन थोड़ा मौन रखें - मौन मन को शुद्ध करता है।
2. अनुभव साझा करें - युवा पीढ़ी के लिए दिशा बनें।
3. क्षमा करें - क्षमा मन को हल्का करती है।
4. हँसना और सुनना जारी रखें - यही आत्मरस है।
5. सेवा करें - वास्तव में वही धनी है जो देता है। पचास के बाद जीवन का अर्थ बदल जाता है। अब यह समय दौड़ का नहीं, आत्म-साधना का है। रिटायरमेंट कर्म से नहीं, कर्मबंधन से मुक्ति है। अब वही करना है जो आत्मा को आनंद दे - ध्यान, संगीत, लेखन, सेवा या अन्य कोई रचनात्मकता। यह उम्र बदला लेने की नहीं, स्वयं को सुंदर बनाकर जीवन को समझने की है। वृद्धावस्था का सम्मान कीजिए ।

डॉ. अजय आर्य
पी.जी.टी. (संस्कृत)
पीएमश्री केन्द्रीय विद्यालय, दुर्ग

सपनों की उड़ान

जितेन्द्र दास मानिकपुरी
उप प्रबंधक (संपर्क व प्रशासन – राजभाषा)
भिलाई इस्पात संयंत्र

उद्यम करके जो विजयी हों, उनका ही होता सम्मान।
लक्ष्य बड़ा हो, ध्येय नेक हो, तभी श्रेष्ठ सपनों की उड़ान।

संकट चाहे जैसा भी हो, आगे बढ़, कर लें स्वीकार।
उत्तुंग हिमालय भी मानव ने नाप लिया है कितनी बार।

सफल नहीं हो पाया कोई, बिना परिश्रम, बिना प्रयास।
रुकें न, जब तक लक्ष्य ना मिले, जीत की नहीं छोड़ें आस।

हैं करने साकार स्वप्न तो, आलस का कर लें संधान।
कर्म करें दृढ़ निश्चय से, हो तभी सफल सपनों की उड़ान।

उद्यम का साहस जिनमें हो, ईश्वर भी देते उनका साथ।
मानव यदि करना चाहे तब ही, आए सफलता हाथों-हाथ।

केवल स्वप्न देखने से होता, नहीं कभी सपना साकार।
श्रम और साहस के संगम से ही सपने लेते आकार।

इच्छित लक्ष्य मिले ना जब-तक थकना ना, रुकना न कभी।
जीत की झलक से मिट जाती हैं तन की विश्रांति सभी।

भारतीय वायुसेना की टीम 'सूर्यकिरण' को समर्पित

हवा में दिल बनाकर, लोगों का दिल चुराया।
सूर्य किरण के करतब ने, छत्तीसगढ़ में इतिहास बनाया।।

वायुसेना के कौशल और शौर्य का, साक्षात दर्शन कराया।
हर दर्शक ने तब था हर पल, वंदेमातरम दोहराया।

रोमांचित हो गए सभी जन, ऐसा आपने करतब दिखाया।
सूर्यकिरण के करतब ने, छत्तीसगढ़ में इतिहास बनाया।।

गरुड़ कमांडो के साथ, आसमान में तिरंगा लहराया
सूर्यकिरण के करतब ने, छत्तीसगढ़ में इतिहास बनाया।।

अभिषेक साहू
इंजीनियरिंग एसोसिएट
बार एण्ड रॉड मिल
भिलाई इस्पात संयंत्र

वंदे वीर जवान

हिमगिरि की गोद में प्रहरी बन कर खड़े,
वीर जवानों के संकल्प अडिग, अचल, अड़े।

हाथों में तिरंगा, मन में धड़कता प्रण,
मातृभूमि के चरणों में अर्पित है यह तन।

ठंडी हवाओं को भी जिनके आगे लाज आए,
ऐसे सपूतों से ही भारत माँ मुस्काए।

बर्फ़ीली ज़मीं पर भी उनके पाँव न डगमगाए,
हर दुश्मन उनके शौर्य से सहम-सहम जाए।

नयन अग्नि समान, हृदय विशाल पर्वत सा,
रणभूमि में साक्षात सिंह समान वह चलता जा।

कंधे पर बंदूक़, पर हृदय में करुणा भी है,
शौर्य के संग-संग सेवा की भावना भी है।

रोक सके ना तम के पर्वत, ना मृत्यु का भय,
जब पुकारे मातृभूमि, उठता है सदा नव जय।

राष्ट्ररक्षा जिनका धर्म, वीरगाथा जिनके नाम,
हर युग में गाया जाएगा उनका अमर बलिदान।

हम शीश नवाते हैं, इन रक्षकों के चरणों में,
जिनसे महकता है विश्वास, भारत के कण-कण में।

उनके सम्मान में हर एक हाथ नमन को उठा,
कह रहा हो जैसे **"भारत माता की जय"** सदा।

गरिमा चंद्रा
तकनीकी प्रशिक्षु
सेल-शाखा विक्रय कार्यालय

जय वीरों की हुंकार

व्योमिका का संकल्प प्रखर,
बिजली सा प्रहार।
सोफ़िया की दृष्टि में चमके,
साहस की तलवार।
संग-साथ जब दोनों बढ़ें,
थम जाए हर भार।
वीर-शक्ति का एक ही मंत्र,
विजय है अधिकार।
"ऑपरेशन सिंदूर था जयवीरों की हुंकार।
तिरंगा जब ऊँचा लहराए,
दे वीरों को आभार।
रणभूमि लिख दे उन पर,
गर्विल उज्ज्वल व्यवहार।
भारत गाए युगों-युगों तक,
इनका शौर्य-विस्तार।
सिंदूर-युद्ध अमर रहे,
राष्ट्र का दिव्य आधार।
"ऑपरेशन सिंदूर था जय वीरों की हुंकार।
ये भारत की नारी है, जो दुख में भी न झुके।
उसके माथे का सिंदूर,
सहनशक्ति की लौ थामे रखे।
नए युग का नया भारत,
हर सवाल का जवाब बने।
शांत स्वभाव में शक्ति लेकर,
हर हाल करे प्रतिकार।
ऑपरेशन सिंदूर था जय वीरों की हुंकार।

दानवीर कौशिक
प्रोजेक्ट असिस्टेंट
आई. बी. आई. टी. एफ.
आई. आई. टी.

सेना का पराक्रम

आतंकी हमलों का बदला, देखे विश्व ज़रूर।
जल, थल, नभ सेना का पराक्रम, ऑपरेशन सिंदूर।
कायरता की भेंट चढ़े थे, वो छब्बीस निर्दोष।
खौल उठा था खून सभी का, जन-जन में था रोष।
मानवता चीत्कार उठी थी, असमय थी मजबूर।
आतंकी हमलों का बदला, देखे विश्व ज़रूर।
जल, थल, नभ सेना का पराक्रम, ऑपरेशन सिंदूर।
हैमर बम, स्कैल्प मिसाइल, कॉमिकेज़ से ड्रोन।
ध्वस्त हो गए सभी शिविर और आतंकी थे मौन।
वक्त मिला न उन्हें संभलने, हो गए चकनाचूर।
आतंकी हमलों का बदला, देखे विश्व ज़रूर।
जल, थल, नभ सेना का पराक्रम, ऑपरेशन सिंदूर।
वज्रपात व पच्चीस मिनट का, दुख थोड़ा तो भूल गया।
शौर्य और साहस सेना का, सबका सीना फूल गया।
छेड़ोगे तो ना छोड़ेंगे, रहना हम से दूर।
आतंकी हमलों का बदला, देखे विश्व ज़रूर।
जल, थल, नभ सेना का पराक्रम, ऑपरेशन सिंदूर।
रण चण्डी व्योमिका, सोफ़िया, करें कुशल अगुवाई।
खून के आँसू रोती विधवाओं को, आस बंधाई।
नवभारत है सबल हिंद यह, दे प्रत्युत्तर भरपूर।
आतंकी हमलों का बदला, देखे विश्व ज़रूर।
जल, थल, नभ सेना का पराक्रम, ऑपरेशन सिंदूर।

विकास की बात

अनगिन पेड़ हैं काटे हमने और विकास की बात हुई है।
खुशियों वाले दिन भी न मिले, दुखों वाली रात हुई है।।

कटे ठूँठ यह कहें कहानी, पेड़ कभी थे हरे-भरे।
इनको काट मरी मानवता, अहंकार श्रृंगार करे।।
शाख पर बैठे जिस पर, हमसे उसी शाख पर घात हुई है।
अनगिन पेड़ हैं काटे हमने और विकास की बात हुई है।।

प्राण वायु पेड़ों से निःसृत दौड़े मानव नस-नस में।
यह जैसे अनमोल फेफड़े प्राण पले हैं अंतस में।।
महाप्राण हम सबके अंदर बाहर झंझावात हुई है।

अनगिन पेड़ हैं काटे हमने और विकास की बात हुई है।
उर्वर भूमि सिसकती अब तो काँक्रीटों के बोझ सहे।।
हरियाली धरती बन बंजर हमसे अपनी व्यथा कहे।
थी विकास से शह की बातें, देखो कैसे मात हुई है।।
अनगिन पेड़ हैं काटे हमने और विकास की बात हुई है।।

भूमि बचाएँ, पेड़ लगाएँ द्रुत विकास के संग चलें।
हर जन जुड़े जमीन से अब तो भावी पीढ़ी को ना छले।।
शिरोधार्य संकल्प तो मानो खुशियों की बरसात हुई है।
अनगिन पेड़ हैं काटे हमने और विकास की बात हुई है।।

केदार नाथ सोनबेर
व्याख्याता, शिक्षा विभाग
भिलाई इस्पात संयंत्र

घुसपैठी न कर सकेंगे मेरे देश को अब आहत,
ऑपरेशन सिंदूर है नए भारत की नई ताकत।
शत्रु न कर सकेगा अब मलिन मेरे देश का मान,
सेना ने वापस दिलाया भारत को उसका सम्मान।
बनी रहे मेरे भारत की आन, बान और शान,
ऑपरेशन सिंदूर का जयघोष है चहुँ ओर गुंजायमान।
वीरों की जननी भारत ने नहीं कभी अन्याय किया,
पर मानवता के दोषी को भी है समुचित दण्ड दिया।
शत्रु संहार के लिए किया है 'ऑपरेशन सिंदूर'
आज का भारत करता है, हर शत्रु के दर्प को चूर।

अमृता गंगराडे
उप महाप्रबंधक (वित्त एवं लेखा),
भिलाई इस्पात संयंत्र

© BCCL 2025. ALL RIGHTS RESERVED.

नराकास, भिलाई-दुर्ग की 61 वीं छमाही बैठक एवं वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह

नराकास, भिलाई-दुर्ग की 61 वीं छमाही बैठक एवं वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह

नराकास, भिलाई-दुर्ग की 61 वीं छमाही बैठक एवं वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह

नराकास, भिलाई-दुर्ग की 61 वीं छमाही बैठक एवं वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह

संघर्ष

विवशता के अश्रुओं में गूंथती
मांग कर लाई उधारी अन्न जो,
काँप बैठी सोच क्या होगा अभी
दी सुनाई 'बूट' की पदचाप ज्यों।

देख मुख, ज्वर में बिलखते पुत्र का
द्वार पर करवट बाँध वह प्रस्तुत हुई,
धैर्य धरती सा लिए लाचार वह
वार तन-मन पर कठिन सहती गई।

पर नहीं यह सिर्फ गृहिणी की कथा
यह व्यथा थी हर नगर की, ग्राम की,
गूँजते स्वर दास्तां के दर्द के
ज़िन्दगी थी कौड़ियों के दाम की।

पीढ़ियाँ अपमान में जलती रहीं
शेष लेकिन राख में चिंगार थी,
बुद्ध के अनुयायियों में भी बसी
कंस को गोपाल की ललकार थी।

लो, युवा वह तीर लेकर लड़ पड़ा
कोखों के व्यूह में अभिमन्यु बन,
वह भवानी भिड़ पड़ी अन्याय से
चंडी का प्रलयंकारी रूप धर।
प्रतिरोध का आवेग देखो उठ रहा
स्वाभिमानी धमनियों में वृद्ध की,
क्रांति का विस्फोट कर सिखला रहा
शिक्षक सत्य होता विजय है धर्म की।

नारे लगाते भारती की मुक्ति के
वे मही के पुत्र भी दृढ़ता धरे,
और ले पूँजी सकल संपन्न जन
यज्ञ में आहूत होने चल पड़े।

शीश अगणित चढ़ गए बलिवेदिका
मिट गए सर्वस्व अपना दान कर,
तब विधाता ने गिराई बेड़ियाँ
भोर भी चहकी निशा अवसान कर।

आशुतोष त्रिपाठी
सहायक महाप्रबंधक, राजहरा खदान
भिलाई इस्पात संयंत्र

ओ पथ के राही.....

ओ पथ के राही, तू पथ से न भटकना,
अंधकार है जरा, उजियारा भी एक दिन आएगा,
तेरा भी वक्त जल्द ही साथ निभाएगा,
व्यथा है जो जीवन की, वो भी पार पा जाएगा,
बस तू इन उलझनों में कभी न अटकना,
ओ पथ के राही तू पथ से न भटकना।

मुश्किलें हों जितनी भी, आगे तू बढ़ते जाना,
मार्ग चुना है जो तूने, उस पर तू डटते जाना,
काँटे चाहे जितने हों, उनको तू फूल बना लेना,
असफलताओं को तू अपना गुरूर बना लेना,
बेमानी की राहों पर तू कभी न झपटना,
ओ पथ के राही तू पथ से न भटकना।

संघर्ष जो तेरा है, वो तुझे फल दे जाएगा,
की है जो मेहनत, वो तुझ को बल दे जाएगा,
क्षण भर का यह काम नहीं, एक लंबा सफ़र कराएगा,
टूटा है तू आज भले ही, कल हीरा बनकर चमकेगा,
नभ का तू एक तारा है, जो एक दिन ज़रूर दमकेगा,
सफलता की भूख में तू ज्यादा न तड़पना,
ओ पथ के राही तू पथ से न भटकना।

उर्वशी
प्राथमिक शिक्षिका
पीएमश्री, केन्द्रीय विद्यालय, दुर्ग

आख़िरी सलाम

(एक सच्चे सैनिक की अमर प्रेम गाथा)

प्रस्तावना

भारत के इतिहास में ऐसी अनेक रातें आईं जब सीमा की ठंडी हवाओं में भी मातृभूमि के लिए जलती हुई आस्था की लपटें थीं। हर युग में कुछ ऐसे सपूत जन्म लेते हैं, जो अपने प्राणों से अधिक माँ भारती के सम्मान को महत्व देते हैं। ऑपरेशन सिंदूर भी ऐसी ही एक कहानी है: एक सैनिक की, जिसने अपने सुहाग के सिंदूर को मातृभूमि की रक्षा के रंग में मिला दिया।

पहला दृश्य : वादा

सर्दियों की वो रात... सीमा पर बर्फ़ गिर रही थी, हवा में बारूद की हल्की गंध थी, और आसमान बादलों से ढका था। कैप्टन वेदांत चौहान अपने छोटे-से टेंट में बैठे थे, हथियारों की जाँच कर रहे थे। बाहर रेडियो पर **"भारत माता की जय"** की धीमी आवाज़ गूंज रही थी। तभी मोबाइल की स्क्रीन पर उनकी पत्नी आर्या का संदेश चमका : **"सुनो, जल्दी लौट आना... माथे का सिंदूर हर रोज़ तुम्हारा नाम लेकर सजता है।"** वेदांत ने मुस्कुरा कर उत्तर दिया:

"आर्या, अब यह सिंदूर सिर्फ तुम्हारा नहीं, देश का भी वचन है... अगर लौटकर आया, तो माँ भारती के माथे पर जीत का तिलक लगाऊँगा।" वो नहीं जानते थे कि यह संवाद उनका आख़िरी वादा बन जाएगा।

दूसरा दृश्य : मिशन की सुबह

18,000 फीट की ऊँचाई पर स्थित तुषार पोस्ट, जहाँ दुश्मन की नज़रें हर पल चौकस थीं। ऑपरेशन का नाम रखा गया था **"सिंदूर"**, क्योंकि यह सिर्फ बदले की नहीं, सम्मान की लड़ाई थी। रात के दो बजे मिशन शुरू हुआ। कमांडो दस्ता बिना आवाज़ किए बर्फ़ में सरक रहा था। हर कदम के साथ मृत्यु और सफलता, दोनों पास आ रही थीं। वेदांत की साँसें तेज़ थीं, पर मन स्थिर हर सैनिक के माथे पर उस दिन जैसे कोई अदृश्य तिल कथा। दुश्मन का गढ़ नष्ट करने के लिए केवल पाँच मिनट का समय था। रेडियो पर आदेश गूँजा : **"टीम अल्फ़ा, आगे बढ़ो। देश तुम्हारे साथ है।"** वेदांत ने आकाश की ओर देखा, मानो माँ भारती स्वयं देख रही हों।

तीसरा दृश्य : आग और आँसू

पहला धमाका हुआ, दुश्मन का मुख्य चौकी ध्वस्त। दूसरा धमाका, गोला-बारूद का भंडार राख। तीसरे बंकर की ओर वेदांत बढ़े ही थे कि पीछे से गोलियों की बौछार शुरू हो गई। उनके तीन साथी ज़मीन पर गिर पड़े। कंधे में गोली लगी, फिर भी वे रुके नहीं। उन्होंने घायल हाथों से ग्रेनेड पिन खींची और बंकर के दरवाज़े पर फेंक दी। धमाका हुआ, दुश्मन के रेडियो स्टेशन की चीख़ें हवा में घुल गईं। वेदांत का शरीर बर्फ़ में ढह गया, पर आँखें अब भी आसमान पर थीं। उन्होंने जेब से आर्या की तस्वीर निकाली, जिस पर सिंदूर की एक बिंदी अब भी चिपकी थी। वो धीमे स्वर में बोले : **"आर्या... ये सिंदूर अब सिर्फ तुम्हारा नहीं रहा... ये देश की रक्षा का प्रतीक बन गया है।"** और फिर उनकी साँसें धीरे-धीरे थम गईं : पर चेहरे पर वही संतोष भरी मुस्कान थी, जो हर विजेता की होती है।

चौथा दृश्य : आख़िरी सलामी

तीन दिन बाद... दुर्गम रास्तों से गुजरता हुआ सेना का काफ़िला तिरंगे में लिपटे कैप्टन वेदांत का पार्थिव शरीर लेकर पहुँचा। पूरे गाँव में शोक के साथ गर्व की लहर दौड़ गई। ढोल कें नहीं, पर हर घर में आरती की थालियाँ सज गईं। लोगों की आँखों में आँसू थे, पर होंठों पर एक ही शब्द : **'जयहिन्द'**

आर्या ने काँपते हाथों से तिरंगे को माथे से लगाया। जनरल ने सलामी देते हुए कहा : **"कैप्टन वेदांत चौहान ने ऑपरेशन सिंदूर को पूर्ण सफलता के साथ पूरा किया। उन के बलिदान ने भारत की अस्मिता को अमर कर दिया।"** आर्या ने आँसू पोंछे, वही

सिंदूर उठाया और अपने माथे पर लगाया। उस क्षण लगा, जैसे पूरा आकाश लाल हो उठा हो। सूर्य की किरणें तिरंगे से झिलमिला रही थीं, और हवा में गूंज रहा था : **"माँ भारती के सपूत अमर रहें!"**

समापन

साल बीत गए, पर हर 15 अगस्त को आर्या तिरंगे के नीचे दीप जलाती हैं। वो दीप वेदांत की आँखों-सा चमकता है। पास खड़े बच्चे पूछते हैं **"आंटी, ये दीप क्यों जलता है?"** आर्या मुस्करा कर कहती हैं " **"ये उस सिंदूर की लौ है, जिस ने एक सैनिक को अमर कर दिया।"** आज भी जब कोई जवान सीमा की ओर रवाना होता है, तो उसकी माँ या पत्नी के माथे का सिंदूर चमक उठता है क्योंकि वह जानती है : वो रंग सिर्फ प्रेम का नहीं,

अंकित खोब्रागड़े
कस्टमर सर्विस एसोसिएट
बैंक ऑफ इंडिया, दुर्ग

महिलाएँ सब कुछ हासिल कर सकती हैं ।

बहुत पीछे छूट गया वो ज़माना,
वो दिन बीते, जब लोग देते थे केवल ताना।
जब महिलाएँ पहनती थीं केवल
माँ, बेटी, बहन और पत्नी का बाना।

आज की महिला है, एक विराट शक्ति,
नहीं है इसमें, कोई भी अतिशयोक्ति।
स्वयं की पहचान बनाकर आगे बढ़ चली,
लक्ष्मी, सरस्वती के साथ ये है महाकाली।

संसार का कोई क्षेत्र न छूटा,
फिर भी उसका कोई रिश्ता न टूटा।
घर बाहर सबको संभालती,
हर परिस्थिति में स्वयं को ढालती।
आज की महिला कर सकती है सब कुछ हासिल,
बना लिया है उसने, स्वयं को इतना क़ाबिल।

डॉक्टर, वकील, शिक्षक, सैनिक,
पायलट, नेता, अभियंता, वैज्ञानिक।
जहाँ देखिए, आज एक सफल महिला है,
इसने जो कुछ हासिल किया है,
वो उसकी अपनी ही मेहनत का सिला है।
नहीं रह गया कोई भी अब संदेह,
यह एक महिला कह रही सविनय, सस्नेह।

हमें ना समझो किसी से कम,
नहीं कोई चढ़ाई हमारे लिए दुर्गम।
सदा रहेंगे हम प्रगति पथ पर अग्रसर,
चाहें बस तुमसे शिक्षा का एक अवसर।
है वादा, व्यर्थ न जाने देंगी किसी अवसर को हम,
आज की हर महिला है, इतनी योग्य, इतनी सक्षम!

उपेक्षा, दमन और शोषण की वह काली रात गई,
स्वयं के बूते कर ली है, हमने अब शुरुआत नई।
नारियाँ नयी सदी की, अब हर संकट से उबर सकती हैं,
अपनी प्रतिभा, परिश्रम और दृढ निश्चय के बूते,
महिलाएँ सब कुछ हासिल कर सकती हैं।
ममता की मूरत कभी, कभी त्याग की प्रतिमूर्ति बने,
कभी संभाले कमान देश की, कभी करे अंतरिक्ष में खोज।
नारी के कोमल हाथों से परिवार, समाज और देश की,
तक़दीर और आने वाली पीढ़ियाँ सँवर सकती हैं।
जी हाँ...! महिलाएँ सबकुछ हासिल कर सकती हैं।

पाखी भगत
भिलाई इस्पात संयंत्र

प्रतिशोध

विवाह-व्रत की चूड़ियों सी,
परस्पर चीख कर बताती थी।
धरती पर बिखरा बेजान सिंदूर,
उसकी व्यथा, नित तड़पाती थी।

पहलगाम की वादियों में,
प्रेम को रक्त से सींचा जा रहा था।
बेजान रक्त रंजित मासूमों को,
पैर से पकड़कर घसीटा जा रहा था।

जीवित विधवा की चीखों से,
प्रकृति की आँखें भीग गईं।
नृशंसता के उस मंजर में क्रोध,
प्रतिशोध का कोंपल सींच गई।

भारत वर्ष का हर तिनका, पत्ता,
उस विष को पीकर नीला पड़ गया।
समूचा देश दुख को संभाल कर,
विश्व समक्ष साहस से अकेला लड़ गया।

वायुसेना ने हुंकार कर निर्भीक कहा,
जिसने रक्तरंजित सवेरा दिखाया है।
समय है उनके लिए सब कुछ करें हम,
जिन्होंने उंगली पकड़ चलना सिखाया है।

सरहद पार के चल रहे जलसों पर,
मिसाइलों की गूँज भारी पड़ गई।
और एक एक करके हर ठिकाने पर,
दुश्मनों की अकड़ सारी जल गई।

लाल अब रंग सिर्फ सिंदूर का नहीं,
दुष्ट आतंकियों की लाशों का भी है।
ऑपरेशन सिंदूर ने बता दिया सबको,
प्रतिशोध पर अधिकार आकाशों का भी है।

'सिंदूर' अब केवल मांग की रेखा नहीं,
स्वाभिमान और बलिदान की निशानी है।
उन माँओं, बहनों और पत्नियों के लिए,
एक अश्रुपूरित अविस्मरणीय कहानी है।

अंधेरी रात में आसमान से मुट्ठी कस कर,
वायुसेना के शौर्य का साया लहराया था।
ये नए युग का भारत है याद रहे आतंकी,
उस रात पाकिस्तान पर तिरंगा फहराया था।

अलंकार समद्दार
प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
भिलाई इस्पात संयत्र

मेरा भारत

मेरा भारत सदा शांति का ही देता संदेश,
पावन माटी, पावन नदियाँ, उत्तम हर परिवेश।
किंतु किसी ने आँख उठा, यदि देखा इसकी ओर
ऐसा दिया प्रत्युत्तर, उसको मिला न कोई ठौर।

निर्दोषों को गोली मारी, कर आतंकी हमला,
पहलगाम से लेकर दुनियाँ का हर देश था दहला।
अपने इस निकृष्ट कृत्य पर शत्रु बहुत इतराया
पर भारत की सेना ने फिर पूरा सबक सिखाया।

हिंदुस्तान तो शांति भाव में रहा हमेशा अगुआ,
बैर भाव से कभी हिंद ने नहीं किसी को छुआ।
कायर रिपु ने इसे भीरुता समझ के कर दी भूल,
भारत की प्रतिक्रिया से काँपा, लगा चाटने धूल।

मांग न्याय की लेकर सारा देश हुआ आक्रोशित
सबक सिखाएँ उसको जो करता आतंक को पोषित।
आतंकी अड्डे सब उसके कर दिए नेस्तनाबूद,
हुए ध्वस्त परमाणु ठिकाने और गोला-बारूद।

वीरों की जननी भारत ने नहीं कभी अन्याय किया,
पर मानवता के दोषी को भी है समुचित दण्ड दिया।
शत्रु संहार के लिए किया है 'ऑपरेशन सिंदूर'
आज का भारत करता है, हर शत्रु के दर्प को चूर।

अमृता गंगराडे
उप महाप्रबंधक (वित्त एवं लेखा),
भिलाई इस्पात संयंत्र

आतंक की खैर नहीं

खुशियाँ छीनी मासूमों की,
क्या था उन बहनों का कसूर?
दहशतगर्दों को मिट्टी में मिलाने,
भारत ने किया ऑपरेशन सिंदूर।

बेटियों की मांग उजाड़ी,
माताओं ने किया करुण विलाप।
उस क्षण कैसे धीरज रखते?
भारतवासी मैं और आप।

वीर सपूतों ने सेना के,
अपना शौर्य दिखाया था।
हर उस आतंकी के मन में,
ऑपरेशन सिंदूर थर्राया था।

बेशक उस दिन वो बहनें,
निशक्त थीं, असहाय रहीं।
सेना के वीर भाइयों ने,
उन बहनों की पीड़ा सही।

जमींदोज़ किया जब आतंकियों को,
तब ऑपरेशन सिंदूर व्याप्त हुआ।
उन मासूम सी बहनों के मन को,
कण भर संतोष प्राप्त हुआ।

साफ संदेश है आतंकियों को,
भारत अब मजबूर नहीं।
वीर वीरांगनाओं की धरती पर,
अब किसी आतंकी की ख़ैर नहीं।

पंकज राठौर
इंजीनियरिंग एसोसिएट
भिलाई इस्पात संयंत्र

ऑपरेशन सिंदूर

अभी तो हुए थे पूरे सात फेरे,
मेहँदी का भी रंग अभी उजला था।
कई सपने संजोए थे हृदय में,
नई राह पर जीवन चला था।

नहीं आती थीं कुरान की आयतें उसे,
पर वह शख़्स बहुत ही भला था।
छीन ली इसी बात पर जान उसकी,
जो हसीन वादियों की सैर पर चला था।

नई दुल्हन और परिवार पूरा बिखर गया,
पता नहीं उन दरिंदों को क्या फला था।
इसी सिंदूर का हिसाब पूरा करने,
देश के जांबाज़ों ने 'ऑपरेशन सिंदूर' लड़ा था।

माना कि नहीं मिला सुहाग वापस उससे,
पर कलेजे को चैन अवश्य पड़ा था।
कर न सकेगा वो फिर दुस्साहस,
शत्रु पर ऐसा करारा वार पड़ा था।

अविलाष प्रसाद पंसारी
उप महाप्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
भिलाई इस्पात संयंत्र

देश उसके गीत गाए

न माँगा उसने कुछ अपने वास्ते, न नाम, न शोहरत के रास्ते।
बस चाहा देश मुस्कुराता रहे, हर सुबह तिरंगा लहराता रहे।

न झुके कंधे, न रुकी रवानी, वो देश की खातिर देता कुर्बानी।
उसके बूते तिरंगा ऊँचा हुआ, पीछे वो छोड़ गया अपनी कहानी।

तिरंगे में लिपटा सोया नहीं था, खामोश पर कुछ खोया नहीं था।
तिरंगे में ही बसी उसकी जान है, देशभक्ति सदा उसकी पहचान है।

कर्तव्य से वो कभी न डिगे, वो मिटा ताकि हम सब जी सकें।
इतिहास भले उसका नाम न बताए, पर देश उसके गीत गाए।

त्रिभुवन लाल साहू
इजीनियरिंग एसोसिएट
पावर एण्ड ब्लोइंग स्टेशन
भिलाई इस्पात संयंत्र

भारत एक मज़बूत राष्ट्र

प्रस्तावना:-

भारत एक शांतिप्रिय देश है, जो न केवल अपने नागरिकों की सुरक्षा के लिए कटिबद्ध है, बल्कि विदेशों में फँसे अपने लोगों की सहायता करने में भी हमेशा अग्रसर रहता है। भारतीय सेना, नौसेना, वायुसेना और अर्धसैनिक बल द्वारा समय-समय पर ऐसे अभियान चलाए जाते हैं। जो न केवल राष्ट्रीय सुरक्षा बल्कि सामाजिक न्याय एवं मानवीय मूल्यों के प्रतीक होते हैं। इन सबका समन्वय रखते हुए, इस अभिमान को चलाया गया था। जिसका नाम था- 'ऑपरेशन सिंदूर'। यह नाम इसलिए रखा गया था। क्योंकि पहलगाम हमले में शहीदों की पत्नियों के सम्मान का प्रश्न था। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आंतकी हमले में 26 निर्दोष व्यक्तियों को धर्म पूछकर बाहरी आतंकवादियों द्वारा गोली मार कर हत्या कर दी गई थी। कई हिंदू महिलाएँ विधवा हो गई, उनका सिंदूर उजाड़ दिया। उन्हीं के सिंदूर का बदला लेने हेतु भारतीय सेना द्वारा "ऑपरेशन सिंदूर" नाम से अभियान चलाया गया।

राष्ट्रीय सुरक्षा:-अपने - अपने देशों की सीमाओं की रक्षा, आंतरिक सुरक्षा, नागरिकों की बाहरी खतरों से सुरक्षा शामिल है। ऑपरेशन सिंदूर ने राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्र में भारत की क्षमताओं को प्रदर्शित किया और आंतकवाद के खिलाफ लड़ाई में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। साथ ही अपने भारतवासियों में एक सुरक्षा की भावना प्रदान की। विश्व के सामने भारत की मजबूती सामने आई। ऑपरेशन सिंदूर ने विश्व को फिर दिखाया कि, भारत एक मजबूत राष्ट्र है। यह अभियान भारतीय सैन्य ताकत का उच्चतम प्रदर्शन था। इससे साफ पता चलता है कि, राष्ट्र की ओर कोई आँख उठाता है- या क्षति पहुँचाता है, तो जबाबी कार्रवाई करने में भारत शक्तिशाली राष्ट्र है और कोई हमारे नागरिकों का खून बहाएगा उसका तो बदला लेके ही मानते है।

सामाजिक न्याय:- सामाजिक न्याय का मतलब समाज के सभी सदस्यों के लिए एक समानता और निष्पक्षता की खोज का प्रतिनिधित्व करता है। इसमें सभी नागरिकों को समान, अवसर, न्याय और सम्मान, सुरक्षा सुनिश्चित करता है। सामाजिक न्याय के बिना, विकास स्थाई नहीं हो सकता है। समाज में रहने वाले हर कोई जिसमें ना कोई धर्म, ना जातपाँत, ना गरीब अमीर, ना ऊँचनीच, सभी को समान अधिकार के साथ सुरक्षा, न्याय प्रदान करना है।

ऑपरेशन सिंदूर एक रूपक है, वास्तविक ऑपरेशन नहीं। यह एक राष्ट्रवादी आख्यान का प्रतीक है। जो हिंदू महिलाओं की वैवाहिक स्थिति की सुरक्षा को राष्ट्र की रक्षा के बराबर मानता है। सभवतः हिंदू विधवाओं के खिलाफ हत्याओं का बदला लेने के लिये सैन्य कार्यवाही का उपयोग करता है। इस अवधारणा को सामाजिक न्याय भी बोला जाता है। सुरक्षा और सामाजिक न्याय का मिलन, एक पैसा विचार है जो यह दर्शाता है कि, एक मज़बूत राष्ट्र वही है जो अपने नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करे और साथ ही सामाजिक न्याम भी प्रदान करे। इसमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि, दोनों ही पहलुओं को अलग-अलग ना देखा जाए। बल्कि, यह एक-दूसरे से जुड़े और एक-दूसरे पर निर्भर है ऐसे मानना चाहिए। जब लोग सुरक्षित महसूस करते हैं और सभी को न्याय समान मिलता है, तो वे देश के विकास में अपनी उच्चतम भागीदारी देने में आगे होते है। ऑपरेशन सिंदूर के ज़रिए भारत की प्रतिक्रिया ने देश की संप्रभुता की रक्षा करने की क्षमता और आतंकवाद का मुकाबला करने की उसकी प्रतिबद्धता के बारे में एक कड़ा संदेश दिया। इसने दिखाया कि भारत अपने लोगों के खिलाफ़ हिंसा बर्दाश्त नहीं करेगा और आतंकवादी खतरों को खत्म करने के लिए तेज़ी से कार्रवाई करेगा। यह ऑपरेशन एक अनुस्मारक है कि आधुनिक दुनिया में आतंकवाद के लिए कोई जगह नहीं है और शांतिप्रिय देशों को ऐसे खतरों के खिलाफ़ एकजुट होना चाहिए।

"ऑपरेशन सिंदूर में राष्ट्रीय सुरक्षा और सामाजिक न्याय इन दोनो को महत्वपूर्ण माना गया। क्योंकि अपनी राष्ट्रीय सेना की ताकतों का प्रदर्शन और हमारी हिंदू महिलाओं के सिंदूर के सम्मान के प्रति प्रतिशोध यह दर्शाता है कि, राष्ट्र की सुरक्षा और सामाजिक न्याय इन दोनों को समान मानकर यह अभिमान चलाया गया था। भारत सरकार व्दारा चलाए गए' ऑपरेशन सिंदूर ने सिर्फ राष्ट्रीय सुरक्षा मजबूत नहीं की, बल्कि साथ ही सामाजिक न्याय को भी विश्व के सामने प्रमाणित किया। क्योंकि इस अभियान के दौरान सिर्फ आतंकी लोगों को तथा उनके कैम्पों को नष्ट किया गया था। उसमें किसी आम नागरिक को नुकसान नहीं होने दिया। इससे साफ पता चलता है कि, राष्ट्र के लिए सुरक्षा जितनी अहम है, राष्ट्र के लिए सामाजिक न्याय भी उतना ही ज़रूरी है।

निष्कर्ष:-

"ऑपरेशन सिंदूर" भारत की आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में एक मोड़ था, लेकिन इसके महत्वपूर्ण सामाजिक और राजनीतिक निहितार्थ भी है। जैसे हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा शक्तिशाली है, मज़बूत है यह पूरी दुनिया को दिखाया। भारतीय महिलाओं के सम्मान और सिंदूर उजाड़ा उसी सिंदूर का बदला लिया गया। यह दर्शाता है कि, सामाजिक न्याय भी उतना ही जरूरी है। ऑपरेशन सिंदूर न केवल सैन्य अभियान था, बल्कि देश के प्रति ज़िम्मेदारी, समर्पण, राष्ट्रीय सुरक्षा और सामाजिक न्याय का मिलन भी था।

|| जय हिंद..जय भारत||

पांडे रेवनाथ सेनफडू
आरक्षी (सामान्य)
सशस्त्र सीमा बल

ऑपरेशन सिंदूर

मैं राष्ट्र का गौरव, मैं शक्ति का आधार हूँ।
मैं शांति की आवाज़, मैं क्रांति का हथियार हूँ।
मैं भारत की सेना, मैं वतन का गुरूर हूँ।
दुनियाँ मुझे पहचान ले, मैं ऑपरेशन सिंदूर हूँ।

मैं पहलगाम में बहा मासूमों का खून हूँ।
पर जो मिला देश को, मैं वह सुकून हूँ।
आतंक की हस्ती मिटा दूँ, फ़ितरत से मग़रूर हूँ।
दुनियाँ मुझे पहचान ले, मैं ऑपरेशन सिंदूर हूँ।

मैं तिरंगे की शान देश का अभिमान हूँ।
दुश्मन का विध्वंस कर दूँ, प्रलय हूँ, तूफान हूँ।
मैं राफेल की गर्जन, विजयंत का नूर हूँ।
दुनियाँ मुझे पहचान ले, मैं ऑपरेशन सिंदूर हूँ।

मैं युद्ध का मैदान हूँ, शहीदों का अभिज्ञान हूँ।
इतिहास मुझे नमन करता, भारत की पहचान हूँ।
मैं जन गण मन की दहाड़, रणविजय का दस्तूर हूँ।
दुनियाँ मुझे पहचान ले, मैं ऑपरेशन सिंदूर हूँ।

वज्र हूँ मैं इंद्र का, शिव का त्रिशूल हूँ।
दुश्मन काँपे थर-थर मुझसे, समर विजय का मूल हूँ।
पवनपुत्र सी शक्ति मुझ में, विश्व में मशहूर हूँ।
दुनियाँ मुझे पहचान ले, मैं ऑपरेशन सिंदूर हूँ।

अनिल कुमार अग्रवाल
जूनियर मैनेजर (प्लांट गैरेज)
भिलाई इस्पात संयंत्र

सुरक्षा और संवेदना

"अन्याय कहीं भी हो, वह हर जगह न्याय के लिए ख़तरा है।" -मार्टिन लूथर किंग जूनियर

2025 की गर्मियों में जब जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग जिले में भारतीय सुरक्षाबलों पर एक कायरतापूर्ण आतंकी हमला हुआ, तो पूरा देश पीड़ा और आक्रोश में डूब गया। यह घटना केवल एक हमला नहीं था, बल्कि भारत की आंतरिक सुरक्षा और मानवीय गरिमा पर एक खुली चुनौती थी। इस चुनौती का उत्तर जिस रूप में दिया गया, वह केवल सैन्य कार्रवाई नहीं बल्कि संवेदनशीलता, न्याय और समाज के प्रति उत्तरदायित्व का प्रतीक था और इस अभियान को नाम दिया गया, ऑपरेशन सिंदूर।

'सिंदूर' भारतीय समाज में नारी गरिमा, विवाह, सुरक्षा और पहचान का प्रतीक है। इस ऑपरेशन को यह नाम देकर भारत ने स्पष्ट किया कि यह युद्ध सिर्फ बंदूकधारियों के खिलाफ नहीं, बल्कि उन परिस्थितियों के विरुद्ध भी है जो निर्दोष लोगों को हिंसा की आग में झोंक देती हैं। ऑपरेशन सिंदूर, एक ऐसा प्रयास बना जिसमें सुरक्षा और संवेदना, दोनों का अद्‌वितीय समन्वय दिखा।

ऑपरेशन की शुरुआत एक व्यापक खुफिया और सैन्य नेटवर्क के साथ की गई। आतंकियों के ठिकानों को चिन्हित करने के लिए ड्रोन, सैटेलाइट इंटेलिजेंस और स्थानीय सहयोग से कार्य किया गया। चुनिंदा ठिकानों पर तेज़ और सटीक कार्रवाई की गई, जिससे आतंकियों के नेटवर्क को भारी नुकसान पहुँचा। लगभग एक महीने के भीतर दर्जनों आतंकी मारे गए या आत्मसमर्पण को मजबूर हुए। लेकिन इस ऑपरेशन की सबसे बड़ी खूबी यह थी कि आम नागरिकों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई।

इससे यह स्पष्ट हुआ कि राष्ट्र केवल सीमाओं की रक्षा से नहीं, बल्कि नागरिकों के जीवन को सुरक्षित और सम्मानजनक बनाने से भी मजबूत होता है।ऑपरेशन सिंदूर का सबसे सुंदर पक्ष यह था कि इसने महिलाओं को एक नया स्वर और स्थान दिया। जिनकी चूड़ियाँ टूटी थीं, जिन्हें समाज ने छोड़ दिया था, वे अब आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनकर उभरीं। 'सिंदूर' केवल माथे पर लगाने वाली चीज़ नहीं रही, वह एक प्रतीक बन गई – गरिमा, सम्मान और पुनः स्थापित पहचान का।यह अभियान उन शहीदों को भी सच्ची श्रद्धांजलि थी जिनकी शहादत के बाद यह उत्तरदायित्व पूरे देश ने उठाया कि अब कोई और मासूम इस आग में न झुलसे। यह केवल आतंकवाद के विरुद्ध नहीं, बल्कि अन्याय, भय और असमानता के विरुद्ध भी एक निर्णायक युद्ध था। ऑपरेशन सिंदूर एक विचार है कि सुरक्षा और न्याय एक-दूसरे के पूरक हो सकते हैं। इस अभियान ने एक गहरा संदेश दिया – कि भारत अब केवल सहन नहीं करेगा, बल्कि सशक्त रूप से जवाब देगा, लेकिन उस जवाब में संवेदना और न्याय दोनों समाहित होंगे। यह केवल सैनिकों की बहादुरी की कहानी नहीं, बल्कि समाज के पुनर्जागरण की भी कथा है। ऑपरेशन सिंदूर एक रास्ता है, एक दृष्टिकोण है, जिसमें बंदूक के साए से निकलकर उम्मीद की किरण में जीने की राह दिखाई गई है। यही वह भारत है जिसकी कल्पना हर नागरिक करता है जहाँ सुरक्षा के साथ न्याय, और बल के साथ करुणा चलती है।

"सुरक्षा केवल सीमा पर नहीं होती, वह उस माँ की आँखों में होती है,
जो अपने बच्चे को स्कूल भेजते समय निडर महसूस करती है।"
- बराक ओबामा

नूपुर बिरवास
सहायक प्रबंधक
द न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड

कहानी

लगा था बाज़ार कहानी का।
खो गया किरदार कहानी का।

कहानी में दम नहीं होगा शायद।
तभी लगा इश्तहार कहानी का।

मुकाम पे पहुँचा के गुम हुआ।
जो था मददगार कहानी का।

उसको हममें दिलचस्पी थी बहुत।
वही था एक तलबग़ार कहानी का।

अंत जैसा है प्रारम्भ वैसा नहीं था।
हर पात्र था गुलज़ार कहानी का।

दूसरे ले उड़े लाइमलाइट उसके हक की।
महरूम रह गया हक़दार कहानी का।

दो प्रेमियों ने शादी करके गलती कर दी।
रह गया अधूरा प्यार कहानी का।

जिसको छोड़ कर तुम आगे बढ़ गए थे।
वही भाग था असरदार कहानी का।

किस्सा खत्म हुआ, कहानी खत्म हुई।
खत्म हुआ घर बार कहानी का।

पीड़ा, ख़ुशी सब भाव व्यक्त किए।
पास था अपने हथियार कहानी का।

प्रदूषण का विकास

प्रदूषण हमने विकास के नाम पर फैलाया है।
जिसकी कीमत को पूरी पृथ्वी ने चुकाया है।
कई प्रजातियाँ खत्म हो गई मानवी लालच में।
खुद को भी कहाँ हमने प्रदूषण से बचाया है।
जल, थल, वायु, सबको दूषित कर डाला है।
सोचो विकास के नाम पर हमने क्या पाया है।
सबका साथ सबका विकास यह करना था हमें।
हमने खुद के फ़यदे के लिए सबको डुबाया है।
जिस धरती के पर्यावरण के कारण हम ज़िन्दा हैं।
उसी पर्यावरण को प्रदूषण के जरिए नुकसान पहुँचाया है।
सभ्य, सुसंस्कृत, बुद्धिशाली का दावा झूठा है।
मानव ने विकास के नाम पर प्रदूषण कमाया है।

मैं से निजात

एक आग सीने में बिछाना चाहता हूँ।
इस ठंडेपन से निजात पाना चाहता हूँ।
मोहब्बत है बहुत सी तुम्हारे लिए।
कितनी है ये तुम्हें बताना चाहता हूँ।
हमसफ़र भी हो जाए, तू मेरे हमज़ाद।
मोहब्बत इस तरह निभाना चाहता हूँ।
घर से निकला, मैं घर की तलाश में।
भटकने के बाद घर जाना चाहता हूँ।
समस्या कोई नहीं केवल मैं ही हूँ।
मैं इस 'मैं' से निजात पाना चाहता हूँ।

अब तो आ जाओ
ये भी किस्त भी भर रहा हूँ मैं।
आखिरी मोहब्बत कर रहा हूँ मैं।
सारे आशिकों ने गम अपने मुझसे बाँटे।
शायर हूँ आशिकों का घर रहा हूँ मैं।
कल जमीर बेचा था आज बेची रूह।
आहिस्ता आहिस्ता मर रहा हूँ मैं।
झूठ कहने का हुनर आ गया है।
अब सच कहने से डर रहा हूँ मैं।
अटेंशन पाने की भूख मौत से बड़ी है जान।
अब तो आ जाओ खुदकुशी कर रहा हूँ मैं।
एक पड़ाव पार किया है दूसरे पड़ाव के लिए।
उसकी नजर से गुज़र के दिल में उतर रहा हूँ मैं।

धरा नहीं बची तो फिर हम कहाँ बचेंगे बताओ।
मानव इतनी सी बात भी समझ नहीं पाया है।
जल, थल, वायु प्रदूषण की सिर्फ़ बातें करने वालों।
कभी कोई बीज रोपा है? या कभी कोई पेड़ बचाया है?

ओमवीर करन
जूनियर इंजीनियरिंग एसोसिएट
कोक ओवन एवं कोल केमिकल विभाग
भिलाई इस्पात संयंत्र

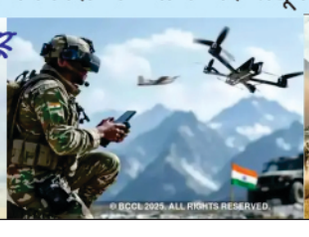

केवल एक युद्ध नहीं

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश को लगातार आंतरिक और बाहरी सुरक्षा खतरों का सामना करना पढता है। इन मुद्दों से निपटने के लिए सरकार ने अलग-अलग समय पर कई कार्यक्रम और अभियान शुरू किए हैं। ऑपरेशन सिंदूर" ने भारत में सैन्य रणनीति और सुरक्षा नीति में एक बड़ा बदलाव लाया है। यह छोटा, लेकिन महत्वपूर्ण सैन्य अभियान न केवल राष्ट्र की सुरक्षा की दिशा में एक साहसी कदम था, बल्कि सामाजिक सुरक्षा और नागरिक सुरक्षा के लिए भारत की प्रतिबद्धता का भी संकेत था। 22 अप्रैल 2025 को कश्मीर के पहलगाम में हुए क्रूर आतंकवादी हमले के प्रतिशोध के रूप में 7 मई को शुरू किया गया, जिसमें 26 निर्दोष पर्यटक मारे गए थे।देश पहलगाम हमले से बिखरा हुआ था। इसके बाद सरकार ने एक कठोर निर्णय लिया आतंक के गढ़, पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में ठहरे आतंकवादी शिविरों पर हमला करने का फैसला लिया। भारतीय वायुसेना ने लश्कर-ए-तैयबा, जैश-ए-मोहम्मद और हिजबुल मुजाहिदीन के नौ ठिकानों को 23 मिनट में तबाह कर दिया।

ऑपरेशन सिंदूर ने ना केवल भारत की सैन्य क्षमता, रणनीतिक बुद्धिमत्ता और राजनीतिक इच्छाशक्ति को दिखाया बल्कि भारतीय सेना ने दिखाया कि वह अब आतंकवादियों को मार डालने में संकोच नहीं करेगा। यह हमला एक स्पष्ट सूचना था कि भारतीय नागरिकों पर किए गए किसी भी हमले का कड़ा प्रतिकार करेगा। सीमाओं पर युद्ध सिर्फ ऑपरेशन सिंदूर नहीं था; यह भारतीयों की सामाजिक सुरक्षा की दिशा में एक मजबूत झलक था। सैन्य बलों को पूरी स्वतंत्रता दी जाएगी और आम नागरिकों की सुरक्षा सबसे पहले होगी। ऑपरेशन सिंदूर ने भारत-पाक संघर्ष पर पूरे विश्व समुदाय की ध्यान आकर्षित किया। अमेरिका और ब्रिटेन ने धैर्य और शांति की सलाह दी, लेकिन भारत ने अपने रुख स्पष्ट कर दिया कि यह कदम आतंकवाद के खिलाफ थी, न कि किसी विशेष देश के खिलाफ। भारत की वर्तमान स्थिति उसकी विदेश नीति में परिपक्वता और स्वतंत्रता का संकेत है।

ना सीमाएँ थीं बाधा, ना कूटनीति की जंजीर,
ऑपरेशन सिंदूर था भारत की वीरता की तस्वीर।
ये सिर्फ़ जवाब नहीं था, ये इतिहास में लिखी चेतावनी थी,
कि अब हर आँसू का हिसाब होगा - यही हमारी कहानी थी।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि "ऑपरेशन सिंदूर सिर्फ एक सैन्य अभियान नहीं है, बल्कि यह भारत की राजनीतिक, सामाजिक और कूटनीतिक ताकत का प्रतीक है।" यह बयान सुनिश्चित करता है कि भारत अब सिर्फ प्रतिक्रिया देने के बजाय आतंकवाद के खिलाफ सक्रिय रूप से रणनीति बना रहा है। निष्कर्ष: ऑपरेशन सिंदूर ने भारत की सामाजिक और राष्ट्रीय सुरक्षा को एक सूत्र में पिरो दिया है। यह शहीदों और पीड़ितों के प्रति वास्तविक श्रद्धांजलि है, साथ ही आने वाले समय के लिए एक स्पष्ट संदेश दिया है कि भारत आतंकवाद, नागरिकों की सुरक्षा और अपनी संप्रभुता को बचाने के लिए हर संभव कोशिश करेगा।इसलिए यह कहा जा सकता है कि ऑपरेशन सिंदूर केवल एक युद्ध नहीं था; यह भारत की नई राष्ट्रीय सुरक्षा नीति की एक मजबूत नींव है, जिसमें साहस, रणनीति और जनसुरक्षा का एक विशिष्ट मेल है।

अप्पु बेहरा
जूनियर इंजीनियरिंग एसोसिएट
बार एण्ड रॉड मिल
भिलाई इस्पात संयंत्र

बोझ

जिस उंगली को थाम कर तुमने चलना शुरू किया।
जिस ममता के आँचल तले अपना बचपन जिया।
आज ऐसा क्या हुआ, कि तुमने उन्हें भुला दिया
और उन काँपते हाथों से अपना दामन छुड़ा लिया।

उन्हें तो पता भी नहीं, क्या है उनका अपना कसूर।
सज़ा मिली है, तो किया होगा कोई गुनाह ज़रूर।
गलती से तुम्हें वो अपनी पूरी दुनियाँ समझ बैठे।
तभी तो छोड़ आए उन्हें अपनी ज़िन्दगी से कहीं दूर।

शायद बोझ लगते हैं वो, अपने काँधों पर अब तुम्हें।
कि, लड़खड़ाते हैं वो, क्योंकि हो गई कोई बीमारी।
वो लगते हैं तुम्हें आसपास मंडराती एक परेशानी।
जिसे काँधों से उतारने में लगती तुम्हें समझदारी।

समझदार बन गए हो तुम, पर वो कच्चे रह गए।
तुम्हारे सुनहरे कल के लिए जाने क्या-क्या सह गए।
हिसाब करना तो कभी भी नहीं आया शायद उन्हें।
इसीलिए बेहिसाब प्यार लुटाकर वो कंगाल रह गए।

कहते हो चलने के लिए सहारा देना पड़ता है बार-बार।
भूल जाते हैं, और एक ही सवाल को पूछते है बारबार।
क्या अपने बचपन में तुम भी ऐसा नहीं थे कभी।
अपनी गुज़री ज़िन्दगी में पीछे मुड़ के देखना एक बार।

तुम्हारी बारी आई जब, तो तुमने मुँह मोड़ लिया।
अपने ही भगवान से भला कैसे नाता तोड़ लिया।
एक तुम्हीं पर तो ज़िन्दगी भर का भरोसा था उन्हें।
आज ज़िन्दगी की शाम में तुमने ही साथ छोड़ दिया।

नियम है यह सृष्टि का समय लाता है हर बदलाव।
तुम्हारे जीवन में भी देखना कभी आएगा ये पड़ाव।
कमज़ोर नज़रें, फूलती साँसें और लड़खड़ाते कदम।
देखो तुम भी किसी के लिए कभी बोझ ना बन जाओ।

शुभ्रा सिन्हा
वरिष्ठ प्रबंधक (आई. टी.)
बैंक ऑफ बड़ौदा

भारत की धरती पर

पहलगाम की वादियों में, हृदयविदारक नज़ारा था।
निहत्थों को जब कायरों ने, धर्म पूछ कर मारा था।।
मानवता के दुश्मन थे वे, कारनामे शैतानी थे।
नापाक धरती के पोषक, वो आतंकी पाकिस्तानी थे।।

उनको शरण दिया था कुछ, सिरफिरे मक्कारों ने।
हिंदुस्तान में पले बढ़े, कुछ मुट्ठी भर गद्दारों ने।।
सबक सिखाने उनको, सेना ने ऑपरेशन सिंदूर किया।
त्राहि-त्राहि कर उठे आतंकी, ऐसा प्रहार भरपूर किया।।

उन आतंकी आकाओं ने, कभी नहीं सोचा होगा।
बहनों के सुहाग का मूल्य, इतना प्रचंड-प्रबल होगा।।
मिट्टी में मिल गए आतंकी, बारूद की बौछारों से।
नौ अड्डे उनके तबाह हो गए, भारत के तीव्र प्रहारों से।।

रणचंडी बन टूट पड़ी सोफिया, पाकिस्तान की छाती पर।
भूखी शेरनी टूट पड़ी थी, आतंकवाद की माटी पर।।
उनके ही घर में घुस कर उन्हें, ऐसा सबक सिखाया था।
उन नापाक नरमुण्डों से ही, माँ का क़र्ज़ चुकाया था ।।

पाकिस्तान की सेना में भी मची खलबली भारी थी।
26 के बदले सेना ने, कितनों की शीश उतारी थी।।
भारत की धरती पर फिर, यदि ऐसा कृत्य कहीं होगा।
घर में घुस कर मारेंगे फिर, दुश्मन जहाँ पर भी होगा।।

जय प्रकाश पाण्डे
कनिष्ठ अभियंता
एन.एस.पी.सी.एल.

भारत के हम लाल

एक हमारी भारत भूमि, रखना इसका मान है।
अनेकता में समाई एकता, भारत की पहचान है।

जन्नत है कश्मीर की धरती, शान से खड़ा हिमालय है।
मातृभूमि की आन की रक्षा, पहला कर्तव्य हमारा है।

विश्व शांति है मंत्र हमारा, भाईचारे पर विश्वास है।
विश्व पटल पर भारत की, छवि अतुलित और खास है।

भारत माँ जननी हमारी, हम ही भारत के लाल हैं।
आँख उठा गर देखा किसी ने, तो बनते उसके काल हैं।

विटेश्वर नाथ
उप प्रबंधक, एस.पी. 3
भिलाई इस्पात संयंत्र

भारत का प्रण

दहले आतंकी अड्डे, थर्राए उनके आका,
मिट्टी में मिला दिए, हर पाप का खाका।
शांति का संदेश देते हैं, ये है हमारी पहचान,
पर डरपोक समझने की भूल करे न कोई नादान।
भारत है बुद्ध का अनुयायी, गांधी का अनुयायी महान
पर शस्त्र उठाना भी जानते हैं, जब हो देश पर आन।
आतंक के आकाओं सुन लो, ये भारत का प्रण,
मिटाने तुम्हारे नापाक इरादे होकर रहेगा रण।

चंद्रकांत नाग
जे. ई. ए., प्लेट मिल
भिलाई इस्पात संयंत्र

साहस

वर्दी में जब सूरज उगता है, साहस गूँज उठता है,
खुशनुमा वादियों की एक नई सुबह का आगाज़ था।
पर्यटकों की चहल-पहल में मस्ती का अंदाज़ था।
हुआ फिर अचानक से हमला आतंकवादियों का,
रंग लाल कर दिया इसने हरे रंग की वादियों का।
गोलियों के शोर ने पहाड़ों को भी दहला दिया।
लाल लहू के रंग ने नदियों को भी नहला दिया।
कायराना हमले ने पूरे देश को आक्रोश से भर दिया।
जात-पात, धर्म में बँटे समाज को भी एक कर दिया।
उजाड़े थे आतंकियों ने सिंदूर सुहागनों की माँग से।
दिया था संदेश जा कर कह दो देश के प्रधान से।
भारत की आन, बान और सम्मान को ललकारा था।
उनकी हिंसा का कारण बस धर्मों का बँटवारा था।
आगे बढ़े फिर जवान हमारे देने प्रत्युत्तर ललकार का।
ऑपरेशन सिंदूर दिया था नाम हमने इस हुंकार का।
नेस्तनाबूद कर दिया हमने नापाक देश के गद्दारों को।
धरती काँपी, अंबर दहला देखकर हमारे शाहकारों को।
किए तबाह नापाक इरादे उनके जो हिंसा करके ऐंठे थे।
मिटटी में मिलाए उनके ठिकाने जो छुप कर बैठे थे।
दिया विश्वास भारतीय सेना ने मेरे देश की जनता को।
टूटने झुकने कभी न देंगे भारत देश की अखंडता को।
है नमन उन अमर शहीदों को जो काल के ग्रास हुए।
ऑपरेशन सिंदूर भेंट उन्हें जो गौरवशाली इतिहास हुए।
जय हिंद। जय हिंद।

विक्रम घुले
कस्टमर सर्विस एसोसिएट
बैंक ऑफ बड़ौदा
भिलाई

आक्रोश की अग्नि

पहलगाम की घाटी में गूंजी थी, दहशत करती आतंकी बोली।
धर्म पूछकर सैलानियों का, कायरों ने चलाई निर्मम गोली।।

बहू बेटियों के सामने उनके, मांग का सिंदूर उजाड़ दिया।
खून से लथपथ गोद में लेटे, दम तोड़ रहे थे उनके पिया।।

मृत शरीर को बड़ी बेरहमी से, बंदूक की नाल से गोदी।
कहा कुछ कर सके तो कर ले, तुम्हारा पीएम मोदी।।

पाक आतंकियों का इस कदर, कायराना पैगाम।
उनको सपने में भी इल्म नहीं था, इनका क्या होगा अंजाम।।

भारत की रगों में जब आक्रोश, अग्नि बन जलने लगा।
बड़ी ही गोपनीयता से ऑपरेशन सिंदूर पलने लगा।।

धरती ने देखा, आसमान ने सुना, इतिहास ने दर्ज़ किया
ऑपरेशन सिंदूर, आतंकियों सहित ठिकानों को नेस्तनाबूद किया।।

हमले के बाद पाक चिल्लाया, अमेरिका तिलमिलाया।
सटीक लक्ष्य पर स्वदेशी ब्रह्मोस, काम कर वापस आया।।

महिलाओं के हाथों में ऑपरेशन, सिंदूर की कमान थमाई।
मिसाल बन गई पूरे विश्व में यह, अल्प समय की लड़ाई।।

दहशत के अंधियारे में पाक, दुम दबा कर बैठा है।
अपने आका अमेरिका की शह पर, अभी भी ऐंठा है।।

सीज़ फ़ायर के बाद युद्ध विराम, तो हुआ दिखाई दिया है।
देश के वीरों ने ऑपरेशन सिंदूर, को बंद नहीं किया है।।

किशोर कुमार नशीने
सी. एम. ओ. सी. टी.
एल. डी. सी. पी.,
भिलाई इस्पात संयंत्र

करारा प्रहार

ऑपरेशन सिंदूर से भारत ने किया आतंकवाद पर करारा प्रहार।
विश्व को किया अचंभित साधकर हर एक अचूक वार।
भविष्य में अब कोई नहीं करेगा आतंक का समर्थन इस प्रकार।
वरना भारतीय सेना दिखाएगी इससे भी ज्यादा रौद्र अवतार।

संदीप दीक्षित
उप प्रबंधक
सेन्ट्रल मेकेनिकल मेंटेनेंस
भिलाई इस्पात संयंत्र

सामाजिक न्याय

उस अन्याय की पीड़ा को भुलाए नहीं भूला,
देश की बेटी का है सिंदूर जिसने छीना।
उन राक्षसों का कर दे मुश्किल जीना,
ऐ मेरे देश की सेना, मेरे हिंद की सेना।

प्रस्तावना-

22 अप्रैल 2025 को तीन आतंकवादियों ने भ्रमण में गए हमारे देश के नौजवान जोड़ों पर धर्म पूछ कर हमला कर दिया। हिंदू धर्म सुनकर हमारे देश की बहन बेटियों की मांग को उजाड़ दिया और भारत ही नहीं धरती का स्वर्ग कहे जाने वाले कश्मीर के पहलगाम पर कुल 24 पर्यटकों को गोलियों से भून डाला। इन आतंकवादियों ने जिहाद के नाम पर देश में हिंदू मुस्लिम दंगे भड़काने का भी अप्रत्यक्ष प्रयास इस कृत्य से किया। इस घटना के बाद से विश्व में चल रही गौरवपूर्ण भारत की यात्रा को झटका लगा, देश की सुरक्षा की तैयारी को ललकारा गया और हुए सामाजिक अन्याय के कारण बदले की भी आग भड़क उठी।

हमले से आघात-

इस हमले से न केवल पीड़ित परिवार को आघात नहीं पहुंची थी, अपितु पूरा देश बौखला उठा था। मानो हर एक भारतवासी की बेटी बहन का मांग उजड़ गया हो। वह पहलगाम जो अमरनाथ यात्रा जाने का पहला सीढी होता है मानो पूरा बर्बाद हो गया हो। देश की सुरक्षा पर भी उंगलियां उठने लगी और भारत के दुश्मनों का हौसला बढ़ने लगा और सभी देशवासी व पूरे विश्व की निगाहें सरकार के अगले कदम पर पड़ी। सरकार के आगे के निर्णय का बेसब्री से इंतजार हो रहा था।

सरकार के अगले कदम का इंतजार-

ऐसे समय में जब देश में रक्षा के क्षेत्र में बहुत से कड़े कदम उठाए गए हैं, इसके बावजूद हम पर हमला होना हमारी ताकत और आत्मविश्वास को चुनौती देने जैसा था, तो पूरा देश सरकार की जवाबी कार्रवाई की प्रतीक्षा कर रहा था और तभी 26 लोगों की मौत का बदला लेने और सामाजिक न्याय के लिए ऑपरेशन सिंदूर की सैन्य कार्रवाई 8 मई 2025 को किया गया।

जवाबी ऑपरेशन नाम सिंदूर-

हमारे देश में आतंकी हमले में लगभग 350 महिलाएँ विधवा हो चुकी हैं और 26/11 हमले के बाद पहलगाम का आतंकी हमला हम पर दूसरा सबसे बड़ा हमला था, तो ऐसी स्थिति में हमारे देश के बहुत ही संवेदनशील प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस जवाबी कार्रवाई का नाम ऑपरेशन सिंदूर सुझाया, क्योंकि पहलगाम में महिलाओं ने अपने पति को हमले में गंवाया था और उनकी उजड़ी हुई मांग का बदला इस सिंदूर से ही लिया जा सकता था।

देश की ताकत को ललकार-

ऑपरेशन सिंदूर राष्ट्रीय सुरक्षा का सबूत बनकर सामने खड़ा है, हमने राफेल डील किया, हमने सुखोई और तेजस जैसे विमान खरीदे। हॉक भी हमारे पास है और तमाम टैंको की भी डीआरडीओ के योगदान से हमने देश की सुरक्षा के लिए व्यवस्था रखी है तो आतंकियों ने हमला करके हमारी ताकत को ललकारा था। 22 अप्रैल 2025 को हुए पहलगाम आतंकी हमले में हमने अपने बहन बेटियों की मांग उजड़ते देखा और देश के 26 नागरिकों को

मौत के घाट उतारा जाते देखा था, जिसका बदला हमने जैश-ए-मोहम्मद, लश्कर-ए-तैयबा और इंडियन मुजाहिदीन के कुल 9 आतंकी प्रशिक्षण अड्डों को मात्र 25 मिनट में भारतीय वायुसेना के द्वारा तबाह कर दिया। इतनी सटीकता से कितने दबाव में इस ऑपरेशन को अंजाम देना हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा का सबूत देता है और किसी भी पाकिस्तानी नागरिक उसकी सेना के लोगों को ना मारना हमारे सामाजिक न्याय करने की मिसाल पेश करता है।

जन-जन की पुकार का दबाव-

22 अप्रैल की घटना के बाद सरकार पर प्रत्येक भारतवासी की भावना का दबाव बढ़ गया था, जन-जन की यही पुकार थी कि हमें आतंकवाद को खत्म करना है और दुश्मन देश पाकिस्तान को सबक सिखाना है, हर एक शख्स की यही आकांक्षा थी कि पहलगाम हमले के बलिदानियों की जान का बदला लिया जाए और ऐसा लिया जाए कि दुश्मन दोबारा हम पर हमला करने की हिम्मत ना करें।

सामाजिक न्याय कैसे-

किसी स्त्री का गहना, उसका सर्वस्व, उसका पति होता है और उसके पति का इस दुनियाँ से चले जाना उसके जीवन के लिए सबसे बड़ा आघात होता है। ऐसे में आतंकी हत्यारों से बदला लेना ही न्यायोचित था, इसके अलावा पूर्व में भी आतंकियों ने हमारी 350 माता बहनों की मांग उजाड़ी थी, इन सब का बदला आतंकवाद की जड़ों को मिटाकर ही लिया जा सकता था और इन सब के साथ सामाजिक न्याय तभी हो सकता था।

सामाजिक न्याय का दूसरा पहलू देखें, तो भारत ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान किसी पाकिस्तानी सिविलियन या पाकिस्तानी सेना को निशाना नहीं बनाया था, इसमें भी निर्दोषों की जान बचाना एक सामाजिक न्याय का परिचय देता है इस तरह से ऑपरेशन सिंदूर एक सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय सुरक्षा का सम्मिश्रण है। अंत में क्षणभंगुर जीवन लीला के लिए दो पंक्तियाँ समर्पित हैं-

अभी तो मुकुट लिए थे माथ, हुए कल ही हल्दी के हाथ।
हाय लुट गया सब संसार, सिंदूर बन गया ज्यों अंगार।

अभिषेक साहू
इंजीनियरिंग एसोसिएट
बार एण्ड रॉड मिल
भिलाई इस्पात संयंत्र

अब तो आ जाओ

ये मोहब्बत के मारे लोग हैं।
आशिक सारे बेचारे लोग हैं।
सूली से कम सज़ा क्या मिलेगी हमें।
सिस्टम में सारे तुम्हारे लोग हैं।
भूखे नंगे वोट बैंक ही बनेंगे आपके।
निचोड़ लो इन्हें, दुत्कारे लोग हैं।
सत्ता आपकी है, कुछ भी थोपो हमपे।
सर पे बिठाएंगे, ये आपके उतारे लोग हैं
बिना मौत दिए इनको मानोगे नहीं तुम।
आसान मौत देना, ये हमारे लोग हैं।
इनकी खुदकुशी को कायरता ना बताओ।
ये सारे बेचारे सिस्टम से हारे लोग हैं।

ओमवीर करन
जूनियर इंजीनियरिंग एसोसिएट
कोक ओवन एवं कोल केमिकल विभाग
भिलाई इस्पात संयंत्र

तलाश

तेरी यादों की रौशनी में ये शाम खिल गई,
दिल की उजड़ी हुई गलियों में बहार मिल गई।

उड़ता फिर रहा था, आवारा काग़ज़ की मानिंद,
आप क्या मिले, दर-ए-मंज़िल मिल गई।

हसरत-ए-मुलाक़ात थी ज़माने से, जो हुए रूबरू,
कोरे अल्फ़ाज़ को मानो नई रूह मिल गई।

तेरी आँखों के साए में ठहर कर जो गुजारे लम्हे,
थकी हुई ज़िन्दगानी को एक नई मंज़िल मिल गई।

वीरान ज़िन्दगी को थी तलाश ज़माने से बहार की,
तेरी इक मुस्कान संग मुकम्मल वो तलाश हो गई।

अब सफ़र में नहीं रहा कोई तन्हाई का आलम,
तेरे साथ चल पड़ा, तो मुझे दुनियाँ मिल गई।

तन्हा कविताओं को मेरी था न कोई सुनने वाला,
तेरी नज़रों में देखा, तो मुझे महफ़िल मिल गई।

ज़िन्दगी

लम्हा-लम्हा कम होना है ज़िन्दगी,
हर लम्हे में एक उम्र जी लेना है ज़िन्दगी।

यूँ तो रोज़ ही सपने सजाती हैं ये आँखें,
सपनों की ख़ातिर एक उम्र गुज़ार लेना है ज़िन्दगी।

ताउम्र तलाश में मंज़िल, भटकती रही,
वीरान राहों को ही मंज़िल बना लेना है ज़िन्दगी।

कभी ख़्वाब अधूरे, तो कभी चाहतें रही अधूरी,
अधूरी ख़्वाहिशों को भी पूरा समझ लेना है ज़िन्दगी।

जब कोई न हो तन्हाई में बातें करने को,
ख़ामोशी को नग़्मा बना जी लेना है ज़िन्दगी।

ग़मे-ज़िन्दगी की ठोकरों से छलनी दिल हो,
ज़ख़्मों को भी मरहम बना संवार लेना है ज़िन्दगी।

खुशियाँ

जो दिए थे तुमने कभी हमें गुलाब
पलटे तो वो पुरानी किताब में मिले,

वक़्त बिताया था जो साथ कभी कहीं,
लम्हों-लम्हों में गुजरे वो हिसाब मिले,

अधूरी आरज़ूएँ दबी थी कहीं दिल में,
आज सहसा वो भूले हुए ख़्वाब मिले,

धुंध में डूबी राहों में जब गुम हो मंज़िल,
हर सवाल के कुछ तो जवाब मिले,

ताज्जुब नहीं कि गमों की पनाहों में भी,
एकाएक खुशियाँ तब लाजवाब मिले,

मद्धम सी गुजरती ज़िन्दगी में सहसा
कोई शख़्स बेतहाशा बेहिसाब मिले,

सफ़र

जहाँ जाएंगे खुशबू फैलाएंगे,
गुलों का तो मज़हब है महकना।

अंधेरों में भी रोशनी बाँटते,
सितारों का काम है चमकना।

कभी नफ़रतों से न रिश्ते सजेंगे,
मुहब्बत का काम है दिलों को मिलाना।

अगर थक भी जाए सफ़र में ,
मुसाफ़िर का फ़र्ज़ है बढ़ते रहना।

उलझनों से निकल जिए जो अलमस्ती में ,
उसके नसीब में है ज़िन्दगी का सँवरना।

दुआ है सभी को अमनपरस्ती का,
शायर का काम है लफ़्ज़ों में ढलना।।

नितिन गोस्वामी
सहायक अधीक्षक
डाक विभाग

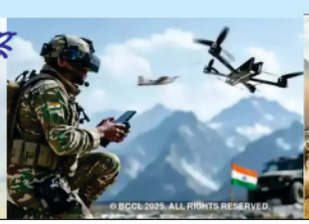

वतन को सलाम

चाहता हूँ, कि कोई नेक काम हो जाए, मेरी हर साँस देश के नाम हो जाए

जो सर उठे तो मेरे सामने तिरंगा हो, जो सर झुके तो वतन को सलाम हो जाए।

ये कविता केवल किसी कवि के मन का भाव नहीं, बल्कि पूरे देशवासियों के मन का भाव व्यक्त करती है। 22 अप्रैल को कश्मीर के पहलगाम में हुई निर्मम आतंकी घटना भारत के धैर्य की परीक्षा थी, जब निर्दोष नागरिकों को केवल उनके धर्म के आधार पर मौत के घाट उतारा गया। यह केवल मानव अधिकार का उल्लंघन ही नहीं, बल्कि एक राष्ट्र की आत्मा पर किया गया आघात था, क्योंकि भारत ने जब इस हमले को झेला तब समस्त देशवासियों की अनुभूति अत्यंत दुखभरी थी। इस समय भारत ने दिखा दिया कि शांति की इच्छा हमारी शक्ति की कमजोरी नहीं है और जवाब दिया 'आपरेशन सिंदूर' से।

क्या है ऑपरेशन सिंदूर:- ऑपरेशन सिंदूर नाम स्वयं ही व्यक्त करता है किसी भी भारतीय संस्कृति में विवाहित स्त्री के सम्मान, सुरक्षा और आत्मसम्मान के प्रतीक के रूप को। 'ऑपरेशन सिंदूर' सिर्फ सैन्य कार्रवाई नहीं बल्कि न्याय की शुरुआत है। ऑपरेशन सिंदूर' का अर्थ है पहलगाम में हुए जघन्य कृत्य का प्रतिशोध, जिसमें धर्म के आधार पर हिन्दू महिलाओं के पतियों की निर्मम हत्या की गई थी। सिंदूर विवाहित हिन्दू महिलाओं का प्रतीक है। यह समाज की महिलाओं को सुरक्षित रखने की राष्ट्रीय प्रतिबद्धता है। यह कार्रवाई न केवल रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण थी, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के समक्ष भारत की आतंकवाद के प्रति 'जीरो टालरेंस' नीति का स्पष्ट संकेत भी था।

उद्देश्य:- 'ऑपरेशन सिंदूर' का उद्देश्य न केवल पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों को ध्वस्त करना था, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा स्थापित करने के लिए आतंकवाद एवं आतंक को समर्थन करने वाले देश पर खौफ़ पैदा करना था। 'ऑपरेशन सिंदूर' केवल आतंकी ठिकानों पर किया गया सुनियोजित एवं संगठित हमला था, जिसमें कोई आम नागरिक हताहत.. नहीं हुआ, न ही किसी सैन्य ठिकाने पर हमला किया गया।

'ऑपरेशन सिंदूर' किसी युद्ध को भड़काने की मंशा से नहीं किया गया था, बल्कि भारत द्वारा अपनी प्रतिरोधात्मक क्षमता को फिर से प्रमाणित करने के उद्देश्य से किया गया था।

स्त्रोत :- सन् 2008 में हुए मुंबई आतंकी हमला, सन् 2016 में हुए पठानकोट हमला, उरी हमला, 2019 में हुए पुलगामा अटैक से लेकर पहलगाम हमला। इस पर भारत ने अपने उन्नत तकनीकी क्षमताओं को देखते हुए अब तक का सबसे सख्त सैन्य जवाब दिया।

इस सैन्य कार्रवाई के अंतर्गत अर्थात 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत, मिसाइल स्ट्राइक किया गया। जिसमें अत्याधुनिक राफेल लड़ाकू विमानों ने 24 से अधिक घातक मिसाइलें दागी। स्कैल्प कूज मिसाइलों और हैमर बॉम्ब ने आतंकी ठिकानों पर सटीक निशाना साधे। 11 एयरबेस पर कहर बरपाने में ब्रह्मोस मिसाइल की अहम् भूमिका रही। नागास्त्र-1, सुखोई-30 एमकेआई से एयरबेस को ध्वस्त करने के लिए निशाना बनाया गया। इस प्रकार ऐसे नौ हथियारों ने मिलकर पाक में तबाही मचा दी।

राष्ट्रीय सुरक्षा:- तमाम देश फौज क्यों रखते हैं? क्या उन्हें लड़ाई लड़ने के लिए रखा जाता है? कोई नासमझ ही यह बात कह सकता है। तो क्या सेना अपनी सुरक्षा के लिए रखी जाती है? लेकिन यह तो छोटे देश करते हैं। महान राष्ट्र तो ऊँचे उद्देश्य के लिए सेना रखते हैं, यह है युद्धों को रोकना। देश जितना ताकतवर होगा, उसे उतनी ही ताकतवर सेना की जरूरत होगी। क्षेत्रों को जीतने के लिए नहीं, न ही दूसरों पर धौंस जमाने के लिए, बल्कि अपने भौगोलिक क्षेत्रों को मिलने वाली चुनौतियों को

नाकाम करने के लिए। सेना का मकसद दूसरे देशों के दुस्साहस को रोकने के लिए उनमें खौफ पैदा करना होता है। तभी स्थाई शांति बनी रहती है और राष्ट्र की सुरक्षा नियंत्रण में रहती है। राष्ट्रीय सुरक्षा स्थापित करने के लिए भारत की रणनीति कुछ इस प्रकार से थी -

सटीक लक्ष्यों का चयनः यह सुनिश्चित किया गया, कि केवल आतंकवाद से जुड़े ठिकानों पर ही हमला हो। जिससे भारत की नैतिक उच्चता और सैन्य अनुशासन का परिचय मिला। मापित और नियंत्रित प्रतिक्रिया: यह कार्रवाई न तो युद्ध की घोषणा थी और न ही उकसावे का प्रयास, बल्कि यह केवल जवाबदेही सुनिश्चित करने वाला प्रतिकार था। राष्ट्रीय सुरक्षा का संदेश: भारत ने स्पष्ट किया कि अपने नागरिकों की रक्षा और आतंकी घटनाओं के प्रति कठोर प्रतिक्रिया में कोई समझौता नहीं होगा।

अंतर्राष्ट्रीय नियमों के अनुकूल भारत की यह कार्रवाई अंतर्राष्ट्रीय नियमों और संप्रभुता के सिद्धांतों का पालन करते हुए आत्मरक्षा के अधिकार के अंतर्गत की गई। यह संयुक्त राष्ट्र के चार्टर के अनुच्छेद 51 के तहत वैध माना जा सकता है। सामाजिक न्यायः पहले भारत 'नो फर्स्ट यूज नीति' पर अडिग रहता था अभी भी अडिग है, पहले संयमित रणनीति अपनाई जाती थी, जिसका मतलब है कि हम अपने परमाणु हथियारों का पहले उपयोग नहीं करेंगें। इस कारण पाकिस्तान भारत को डराने की कोशिश करता था, लेकिन अब 'न्यू नार्मल' सामरिक नीति के तहत् परमाणु ब्लैकमेल स्वीकार नहीं करेगा और कम उकसावे पर भी निर्णायक हमला करेगा। भविष्य में कार्रवाई की सीमा और इंतजार की अवधि भी कम की जायेगी। 'अधर्म का नाश और धर्म की स्थापना के लिए शस्त्र को उठाना ही पड़ता है।'- महाभारत में श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा था। भारत के लोगों का खून बहाने वाले, हमारी बहनों का सिंदूर छीनने वालों का एक ही अंजाम होगा- विनाश और महाविनाश।

भारत को अपने सुरक्षा तंत्र को और सुदृढ़ बनाने के लिए अपने सीमावर्ती क्षेत्रों में खुफिया तंत्र को और सशक्त करना चाहिए तथा यह सुनिश्चित करना चाहिए, कि आंतरिक रूप से देश में कोई अस्थिरता आतंकियों के उद्देश्यों को पूरा न कर सके। क्योंकि यह सैन्य प्रतिक्रिया भले एक बार का उपाय हो, लेकिन इसका संदेश बहुत बड़ा है।

आतंकियों ने कायरता की हद पार कर दी. उन्होंने धर्म पूछकर गोलियों मारी थी। हमारा पहला धर्म देश है। हमारा पहला धर्म समाज है जिससे मिलकर देश बना है। जिसने हमें बनाया है। हमारा देश गोद है, जिसमें हम पले-बढ़े है और वो सिंदूर भी, जो हमारी आन-बान-शान और लाज है। हमने सिंदूर की ताकत दुनिया को दिखाई। आज जो पाकिस्तान आततायियों की मौत पर घड़ियाली आँसू बहा रहा है, उसे हमारे उन घरों का अंदाज़ा कैसे हो सकता है, जिनके आँगन सूने हो गए। जिनकी गोद उजड़ गई। जिन मांगों का सिंदूर मिट गया। ये भारत है, आज हमने दिखा दिया कि, यहाँ धर्म के नाम पर कभी कोई भेदभाव न हुआ है, न होगा। यही वजह है, कि पाकिस्तान में मौजूद आतंकी अड्डो को तबाह करने वाले 'ऑपरेशन सिंदूर' की जानकारी सेना की तरफ से दो बेटियों कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने दी। कुल मिलाकर पाकिस्तान हो या कोई और देश उनका सिंदूर से भले कोई वास्ता नहीं हो, लेकिन आज के बाद कोई इस सिंदूर की ताकत को भुला नहीं पाएगा।

पद्मा लाल सिन्हा
जूनियर इंजीनियरिंग एसोसिएट
एस.एम.एस. 3
भिलाई इस्पात संयंत्र

सिंदूर का रिश्ता

सिंदूर के रिश्ते पवित्र होते हैं, जो प्रेम और विश्वास का ज्वलंत प्रतीक हैं। वैदिक काल में भी स्त्रियाँ अपनी माँग में सिंदूर लगाती थीं। वेदों में उल्लेख मिलता है कि विवाहित स्त्रियाँ अखंड सौभाग्य की प्राप्ति के लिए सिंदूर का प्रयोग करती थीं। सिंदूर को कुंकुम भी कहा जाता है और इसे पंच-सौभाग्य का एक अंग माना गया है। इसके प्रमाण ऋग्वेद और अथर्ववेद जैसे प्राचीन ग्रंथों में मिलते हैं। सिंदूर को देवी लक्ष्मी और पार्वती से जोड़ा जाता है क्योंकि यह उनके सौभाग्य समर्पण, सुहाग और शक्ति का प्रतीक है। सिंधु घाटी सभ्यता में भी सिंदूर लगाने की परंपरा के प्रमाण मिलते हैं। यह हिन्दू धर्म की एक महत्वपूर्ण पारंपरिक प्रथा है, जो पति की दीर्घायु, सुखी वैवाहिक जीवन और समर्पण की निशानी है। सिंदूर केवल श्रृंगार नहीं बल्कि एक भावनात्मक और आध्यात्मिक संबंध का प्रतीक भी है, जो स्त्री को अपने पति से जोड़ता है। कुछ मान्यताओं के अनुसार, सिंदूर लगाने से सकारात्मक ऊर्जा और आत्मबल का संचार होता है।

सिंदूर की खोज प्राचीन काल में हुई थी। पिसे हुए सिनेबार से बने सिंदूर का प्रथम ज्ञात उपयोग लगभग 7000 ईसा पूर्व में हुआ था, जो आधुनिक तुर्की के नवपाषाण युगीन गाँव कैटलहॉयुक में पाया गया था। स्पेन में सिनेबार का खनन लगभग 5300 ईसा पूर्व से शुरू हो गया था। यह आकर्षक लाल या नारंगी रंग का ठोस पदार्थ होता है, जो ऐतिहासिक रूप से चित्रकला, चीनी मिट्टी और सजावटी कलाओं में उपयोग किया जाता रहा है।

भावनात्मक दृष्टिकोण से देखें, तो सिंदूर एक पत्नी के लिए उसकी पहचान, उसका स्वाभिमान, और उसके जीवन का अर्थ बन जाता है। यह भाव इन शब्दों में सुंदर रूप से व्यक्त होता है:

एक पति ने क्या खूब कहा है : हमारी गैरमौजूदगी में भी वो अपना फर्ज निभाती है, हम रहें न रहें, वो हर रोज, हमारे नाम का सिन्दूर, अपनी माँग में लगाती है।

एक पत्नी के भावपूर्ण शब्दः गहने-जेवरात का तनिक मोल नहीं मुझे, सोलह श्रृंगार का भी रत्ती भर मोल नहीं मुझे। बस इतनी सी आस है मेरे प्रिये, तुम्हारे हाथों से समर्पित हो सुर्ख लाल सिन्दूर मुझे।

ऑपरेशन सिन्दूर: एक भावनात्मक प्रतिशोध हमारे देश की महान पवित्र परंपराओं के बीच, कश्मीर के पर्यटन स्थल पहलगाम में एक अमानवीय घटना ने देश को झकझोर कर रख दिया। कुछ आतंकियों ने वहाँ आए पर्यटकों को उनकी पत्नियों के सामने ही मौत के घाट उतार दिया। इस बर्बरता ने न केवल लोगों की जान ली, बल्कि कई महिलाओं का सिन्दूर उजाड़ दिया, उनके सुहाग का दीपक बुझा दिया। इस घटना से समूचा देश शोकाकुल हो गया। आतंकियों ने नारी के सौभाग्य का अपमान कियाऔर इंसानियत को शर्मसार कर दिया।

भारत सरकार ने इस घटना का तुरंत संज्ञान लिया और आतंकियों की खोजबीन शुरू की। यह ज्ञात हुआ कि ये आतंकी भारत में आतंक फैलाकर पाकिस्तान में बने अपने अस्थायी ठिकानों में शरण ले लेते हैं। भारत सरकार ने पाकिस्तान से इन आतंकी ठिकानों को नष्ट करने और आतंकियों को भारत के हवाले करने की माँग की। लेकिन पाकिस्तान के असहयोगी रवैये और आतंकियों के दुस्साहस को देखते हुए, भारत ने सैन्य कार्रवाई का निर्णय लिया।

भारतीय सेनाओं ने एक संगठित और तीव्र सैन्य कार्रवाई की योजना बनाई और इस सैन्य अभियान को नाम दिया गया "ऑपरेशन सिन्दूर"।

सरकार ने इस नाम के पीछे भावनात्मक तर्क भी रखाः "ऑपरेशन सिंदूर वास्तव में एक प्रतीकात्मक नाम है। सिंदूर वह निशानी है जो हिंदू परंपरा में विवाहित महिलाओं के माथे पर लगाया जाता है। पहलगाम हमले में आतंकियों ने जिन महिलाओं के पति की हत्या की, उनका सिंदूर उजड़ गया। इसलिए यह अभियान 'सिंदूर का बदला खून' की तरह है।

"ऑपरेशन सिंदूर भारत द्वारा पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पी ओ के-पाक अधिकृत कश्मीर) में 6-7 मई, 2025 की रात को किया गया एक सैन्य हवाई अभियान था। इसका उद्देश्य पाकिस्तान और पी ओ केमें आतंकवादी ठिकानों को निशाना बनाना था। यह अभियान 22 अप्रैल, 2025 को पहलगाम में हुए आतंकी हमले के जवाब में चलाया गया था, जिसमें 26 पर्यटकों की मौत हो गई थी। ऑपरेशन सिंदूर का लक्ष्य था आतंकवादी ठिकानों को नष्ट करना।

उद्देश्यः पहलगाम हमले का बदला लेना और आतंकवाद को रोकना।

विशेषताः भारतीय वायु सेना द्वारा 9 आतंकी ठिकानों पर हवाई हमले किए गए। परिणामः इस हमले में कई आतंकवादी ठिकाने नष्ट किए गए, आतंकवादियों को भारी नुकसान हुआ और पाकिस्तानी सेना के 35-40 जवान मारे गए।

भारत का पक्षः भारत का कहना है कि इस अभियान में किसी भी निर्दोष नागरिक को नुकसान नहीं पहुंचाया गया है।

पाकिस्तान का पक्षः पाकिस्तान ने इस हमले की निंदा की है और कहा है कि उनके कुछ निर्दोष लोग मारे गए हैं। ऑपरेशन सिंदूर को भारतीय सशस्त्र बलों के तीनों अंगों (थल सेना, वायु सेना और नौसेना) ने मिलकर अंजाम दिया था। इस अभियान में खुफिया जानकारी जुटाने में एविएशन रिसर्च सेंटर (ARC) ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। ऑपरेशन सिंदूर की परिकल्पना नियंत्रण रेखा के पार और पाकिस्तान के अंदर तक आतंकी ढांचे को नष्ट करने के लिए एक दंडात्मक और लक्षित अभियान के रूप में की गई थी। बहु-एजेंसी खुफिया जानकारी ने नौ प्रमुख शिविरों की पुष्टि की जिन्हें अंततः ऑपरेशन में निशाना बनाया गया था।

"ऑपरेशन सिन्दूर" केवल एक सैन्य कार्रवाई नहीं, बल्कि उन स्त्रियों के सौभाग्य और सम्मान की रक्षा के लिए भारत की प्रतिज्ञा है। यह उन आतंकियों को दिया गया जवाब है, जिन्होंने मासूमों का जीवन छीना और नारी के सिन्दूर को अपमानित किया। यह ऑपरेशन हमारी सैन्य शक्ति के साथ-साथ हमारी संस्कृति, परंपरा और नारी सम्मान की रक्षा का प्रतीक बन गया। प्रगतिशील देशवासी यही कहते हैं :-

यह नया भारत है मेरा, सहन नहीं है अब करता।

जहाँ भी छुपा है आतंकी, प्रहार वहीं है करता।

जय हिंद ।।

शालिनी के. मानकर
सहायक नर्सिंग अधीक्षक
भिलाई इस्पात संयंत्र

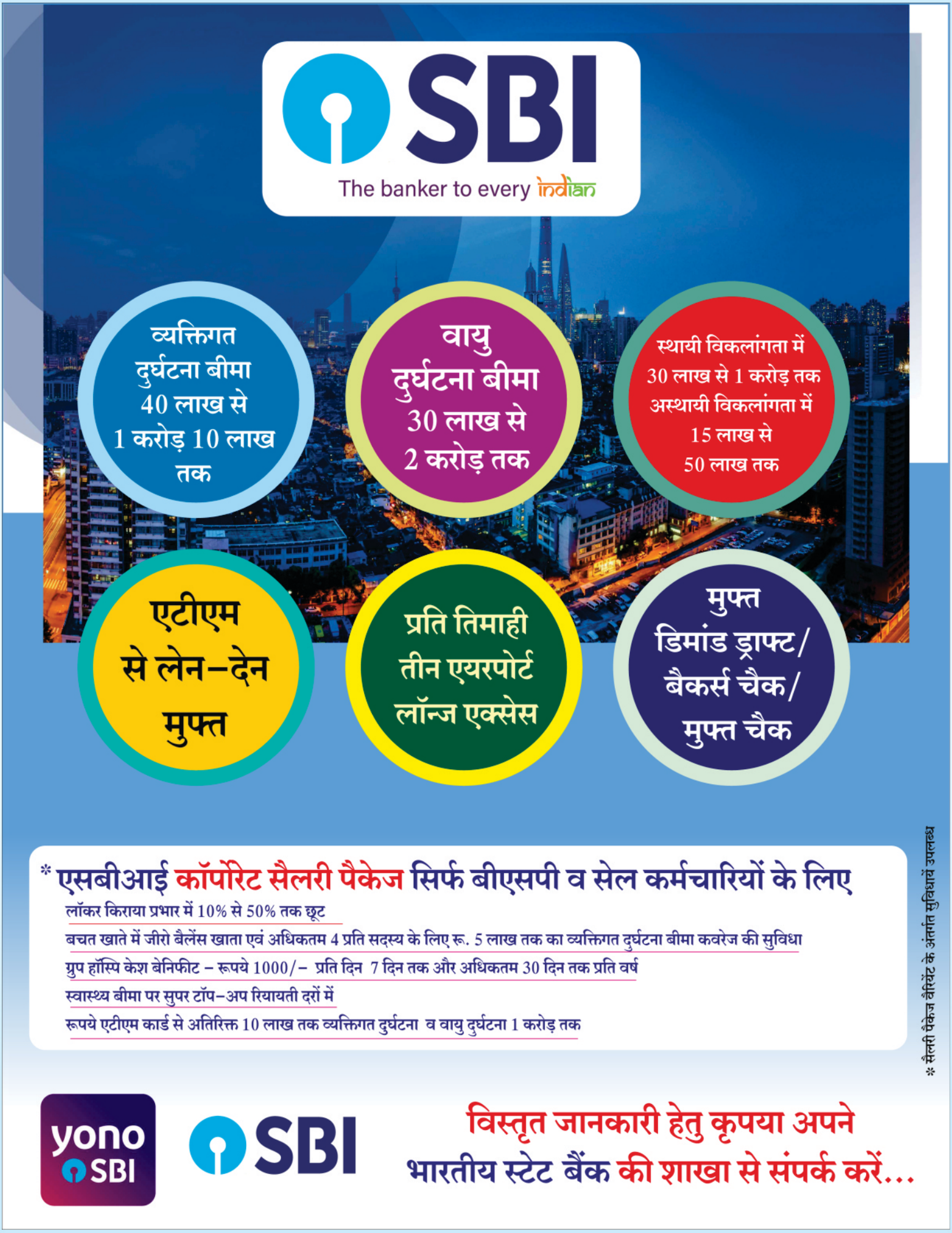
SBI
The banker to every Indian
व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा 40 लाख से 1 करोड़ 10 लाख तक
वायु दुर्घटना बीमा 30 लाख से 2 करोड़ तक
स्थायी विकलांगता में 30 लाख से 1 करोड़ तक अस्थायी विकलांगता में 15 लाख से 50 लाख तक
एटीएम से लेन-देन मुफ्त
प्रति तिमाही तीन एयरपोर्ट लॉन्ज एक्सेस
मुफ्त डिमांड ड्राफ्ट/ बैकर्स चैक/ मुफ्त चैक
* एसबीआई कॉर्पोरेट सैलरी पैकेज सिर्फ बीएसपी व सेल कर्मचारियों के लिए
लॉकर किराया प्रभार में 10% से 50% तक छूट
बचत खाते में जीरो बैलेंस खाता एवं अधिकतम 4 प्रति सदस्य के लिए रू. 5 लाख तक का व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा कवरेज की सुविधा
ग्रुप हॉस्पि केश बेनिफीट – रूपये 1000/- प्रति दिन 7 दिन तक और अधिकतम 30 दिन तक प्रति वर्ष
स्वास्थ्य बीमा पर सुपर टॉप-अप रियायती दरों में
रूपये एटीएम कार्ड से अतिरिक्त 10 लाख तक व्यक्तिगत दुर्घटना व वायु दुर्घटना 1 करोड़ तक
* सैलरी पैकेज वैरियंट के अंतर्गत सुविधायें उपलब्ध
yono SBI
SBI
विस्तृत जानकारी हेतु कृपया अपने
भारतीय स्टेट बैंक की शाखा से संपर्क करें...

हिन्दुस्तान स्टीलवर्क्स कंस्ट्रक्शन लिमिटेड

भारत सरकार का एक उपक्रम, एनबीसीसी (इंडिया) लिमिटेड की एक सहायक कम्पनी
निर्माण भवन भिलाई जिला दुर्ग (छ.ग) 490001

हमारी विशेषज्ञता

- औद्योगिक संयंत्रों का निर्माण
- विद्यालयों एवं विश्विद्यालयों का निर्माण
- राजमार्गों एवं पुलों का निर्माण
- खेल परिसरों का निर्माण
- अस्पतालों का निर्माण
- पूर्वोत्तर इलाकों का निर्माण
- देश की हर तरह की अधोसंरचना का निर्माण
- इस्पात संयंत्र का रखरखाव एवं संचालन

एचएससीएल निर्मित ई.डी. प्रोजेक्ट बिल्डिंग, नगरनार का दृश्य

संपर्क करें: वेबसाइट :www.hsclindia.in
ई-मेल: hsclibhilai.sectt@gmail.com
दूरभाष: 0788-2223878

निगमित कार्यालय : एन.बी.सी.सी. स्क्वायर , प्लाट नं -111 F/2,एक्शन एरिया - III, न्यू टाउन, राजारहाट, कोलकाता 700 135

Achha Kiya INSURANCE LIYA
HEALTH | MOTOR | HOME | CROP & MORE

आज का युवा रुकने वाला नहीं।
अब उनका स्वास्थ्य भी सुरक्षित है।

NEW INDIA ASSURANCE
दि न्यू इन्डिया एश्योरन्स कंपनी लिमिटेड
The New India Assurance Co. Ltd

Aaj ka youth unstoppable hai.
Aur ab, unka health cover bhi.

SCAN TO KNOW MORE

युवा भारत हेल्थ पॉलिसी
Yuva Bharat Health Policy

THE NEW INDIA ASSURANCE CO. LTD. (A Government of India Undertaking) Head Office: 87, M. G. Road, Fort, Mumbai - 400001
IRDAI Regn No.: 190 • CIN No.: L66000MH1919GOI000526 Toll Free: 1800 209 1415 WhatsApp: 9833319191 www.newindia.co.in

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

स्मार्ट बैंकिंग की नई उड़ान, भुगतान हुआ अब और आसान.

आपकी जरूरतों के हिसाब से तैयार सुविधाजनक डिजिटल भुगतान समाधान

bob World
- एक ही ऐप में 370+ बैंकिंग सेवाएं
- बचत, निवेश, उधार, ख़रीदारी सहित भुगतान की सुविधा
- मल्टी लेयर सुरक्षा के साथ सुरक्षित बैंकिंग

bob Pay
- तेज़, त्वरित और सुरक्षित यूपीआई भुगतान
- बाधारहित रिचार्ज और बिल भुगतान
- 24x7 आसान राशि अंतरण

इंटरनेट बैंकिंग
- 260+ ऑनलाइन बैंकिंग सुविधाएं
- रिटेल एवं कॉर्पोरेट दोनों प्रकार के उपयोगकर्ताओं के लिए
- सुरक्षित और सुविधाजनक डिजिटल अनुभव

डेबिट कार्ड
- डेबिट कार्ड की प्रीमियम रेंज उपलब्ध
- विशेष लाइफस्टाइल ऑफर्स के साथ
- पात्र ई-कॉमर्स लेनदेन पर लॉयल्टी रिवार्ड प्रोग्राम

व्हाट्सऐप बैंकिंग
- व्हाट्सऐप के माध्यम से 90+ सेवाएं
- बहु-भाषी सहयोग
- सेवा शुरू करने के लिए 8433 888 777 पर "Hi" मैसेज भेजें

bob eRupee
- यूजर फ्रेंडली सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी ऐप
- भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा विनियमित, सुरक्षित और विश्वसनीय ऐप
- मुद्रा का डिजिटल स्वरूप

प्री-पेड कार्ड
- गिफ़्ट कार्ड, ट्रेवल और रिलोडेबल प्रीपेड कार्ड
- कोई बैंक खाता लिंक करने की आवश्यकता नहीं है
- ट्रेवल, गिफ़्ट और दैनिक उपयोग के लिए फायदेमंद

अधिक जानकारी के लिए स्कैन करें

*नियम व शर्तें लागू

टोल फ्री नंबर पर कॉल करें (24x7): 1800 5700 / 1800 5000

https://bankofbaroda.bank.in | हमें फॉलो करें

भारतीय डाक विभाग

डाक जीवन बीमा (PLI)

डाक जीवन बीमा
POSTAL LIFE INSURANCE

भारतीय डाक
डाक सेवा-जन सेवा
India Post
Dak Sewa-Jan Sewa

⬇ कम प्रीमियम ⬆ अधिक बोनस

इससे बेहतर कुछ नही (आपके सेवा में सन् 1884 से)
आज ही आपके परिवार की सुरक्षा एवं समृद्धि
सुनिश्चित करें भारतीय डाक जीवन बीमा के साथ
डाक जीवन बीमा हेतु (प्रति लाख बीमा पर प्रति वर्ष बोनस)

योजनाऐं	सुरक्षा परिवर्तनीय सम्पूर्ण जीवन बीमा WL/CWL	संतोष (EA)	प्रत्याशित सावधि बीमा (AEA)	युगल सुरक्षा	बाल जीवन बीमा (चिल्ड्रन पालिसी)
वर्तमान बोनस दर	7600/-	5200/-	4800/-	5200/-	5200/-

डाक जीवन बीमा के अन्तर्गत ग्राहक

- केन्द्र एवं राज्य सरकार
- सार्वजनिक क्षेत्र के कर्मचारी उपक्रम (पीएसयू)
- संयुक्त उद्यम
- स्वायत्त निकाय
- रक्षा/अर्धसैनिक बल
- राष्ट्रीयकृत, निजी, विदेशी तथा अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक
- सहकारी एवं ऋण सहकारी समिति
- सरकारी विश्वविद्यालय एवं सभी शैक्षणिक संस्था
- निजी शिक्षण संस्था विद्यालय/महाविद्यालय
- डॉक्टर, नर्सेस, हॉस्पिटल स्टाफ
- स्थानीय निकाय
- इंजीनियर एवं डिग्री डिप्लोमा होल्डर आई.टी.आई डिप्लोमा
- प्रबंधन सलाहकार
- चार्टर्ड एकाउंटेन्ट
- आर्किटेक/वकील बार कॉन्सील स्टाफ
- बी.एस.ई./एन.एस.ई. सूचीबद्ध कंपनियों के कर्मचारी
- बी.एड., डी.एड. डिप्लोमा होल्डर
- फार्मेसी कोर्स
- मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय संस्थाओं से उत्तीर्ण स्नातक और डिप्लोमा धारक

डाक जीवन बीमा योजनाएं

- सम्पूर्ण जीवन बीमा योजना (सुरक्षा)
- परिवर्तनीय सम्पूर्ण जीवन बीमा योजना (सुविधा)
- मियादी बीमा योजना (संतोष)
- प्रत्याशित सावधी बीमा (सुमंगल)
- संयुक्त जीवन सावधि बीमा (युगल सुरक्षा)
- बाल जीवन बीमा (चिल्ड्रन पॉलिसी बीमा)

सोचो तो सही - आप गाड़ी - घर लेते हो और साथ में इंश्योरेन्स हो पर अपना खुद का ?

लाभ एवं विशेषताएं

- धारा 80सी के अंतर्गत आयकर में छूट ।
- 03 साल बाद सरेण्डर करने की सुविधा ।
- डाक जीवन बीमा पालिसी भारत के राष्ट्रपति के अधीनस्थ दी जाती है।
- नियमित रुप से जमा पर आपको हाई रिटर्नस देता है।
- बीमा धारक की आयु 19 वर्ष से 55 वर्ष तक होनी चाहिए।
- कुल बीमा की अधिकतम राशि सीमा रु. 50 लाख है।
- किसी भी डाकघर में नगद व चेक द्वारा प्रीमियम जमा करें।
- बीमा स्वीकृति के बाद ऑनलाइन प्रीमियम जमा करने की सुविधा
- बीमा स्वीकृति के बाद इण्डिन पोस्टल पेमेन्ट बैंक (आईपीपीवी) खाता के माध्यम से प्रीमियम जमा करने की सुविधा उपलब्ध है।
- बीमा स्वीकृति के बाद बैंक खातों से माध्यम से प्रीमियम आटो पे जमा करने की सुविधा ।

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करे -

प्रवर अधीक्षक डाकघर दुर्ग संभाग, सिसि भिलाई फोन : 0788-2261675, 2261545 E-mail ID : supdt.durg@gmail.com

MAKE IN INDIA

बी ई एम एल
BEML
Beyond Possibilities

आत्मनिर्भर भारत

प्रमुख क्षेत्रों की परियोजनाओं में रणनीतिक भागीदार

रक्षा और वांतरिक्ष

खनन एवं निर्माण

रेल और मेट्रो

बीईएमएल लिमिटेड

रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन शेड्यूल ए कंपनी

रक्षा और वांतरिक्ष । खनन एवं निर्माण । रेल और मेट्रो

www.bemlindia.in

NTPC

भिलाई

एन एस पी सी एल भिलाई

रजत जयंती वर्ष

NTPC-SAIL POWER COMPANY LIMITED

25

NTPC

wering Steel Energising Na

सेल रिफ्रैक्ट्री यूनिट, भिलाई

सेल SAIL

हमारे उत्पाद

MCH Bricks (एम.सी.एच. ब्रिक्स)

ASC Bricks (ए.एस.सी. ब्रिक्स)

MGT Bricks (एम.जी.टी. ब्रिक्स)

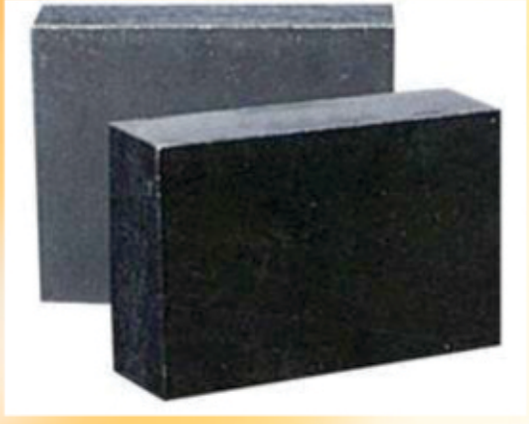

MCB Bricks (एम.सी.बी. ब्रिक्स)

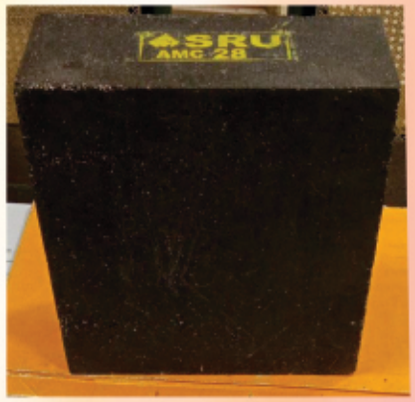

AMC Bricks (ए.एम.सी. ब्रिक्स)

पावरग्रिड
POWERGRID
1 राष्ट्र
ग्रिड
फ्रिक्वेंसी
पावरग्रिड
दुनिया की सबसे बड़ी विद्युत पारेषण उपयोगिताओं में से एक
पावरग्रिड का व्यवसाय
पारेषण
• पारेषण लाइनें– 1,78,975 सर्किट किमी
• सब–स्टेशन– 280
• ट्रांसफॉर्मेशन क्षमता– 5,43,961' एमवीए
परामर्श सेवाएं
• 250 से अधिक घरेलू क्लाइंट्स को पारेषण संबंधी परामर्श
• 23 देशों में वैश्विक उपस्थिति के साथ 30 से अधिक क्लाइंट्स
• पावरग्रिड लीडरशिप एकेडमी– दुनिया भर के प्रतिभागियों के लिए 550+ पाठ्यक्रम
टेलिकॉम
• 1,00,000 कि.मी. टेलिकॉम नेटवर्क का स्वामित्व एवं प्रचालन
• एनकेएन एवं एनओएफएन क्रियान्वयन में प्रमुख परामर्शदाता
भविष्योन्मुखी
• नवीनतम तकनीक द्वारा संचालित
• अत्याधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर
पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (पावरग्रिड), विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार का एक महारत्न सार्वजनिक उपक्रम है, जो देश भर में पारेषण योजनाओं के नियोजन, डिजाइनिंग, वित्तपोषण, निर्माण, प्रचालन तथा विद्युत अनुरक्षण में संलग्न है और टेलिकॉम इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्र में भी प्रभावी उपस्थिति है।
पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
केन्द्रीय कार्यालय : "सौदामिनी", प्लॉट सं.–2, सेक्टर–29, गुरुग्राम, हरियाणा–122001, फोन : 0124-2571700-719
पंजीकृत कार्यालय: बी-9, कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया, कटवारिया सराय, नई दिल्ली-110016
सीआईएन : L40101DL1989GOI038121 | वेबसाइट : www.powergrid.in | फॉलो करें
एक महारत्न पीएसयू